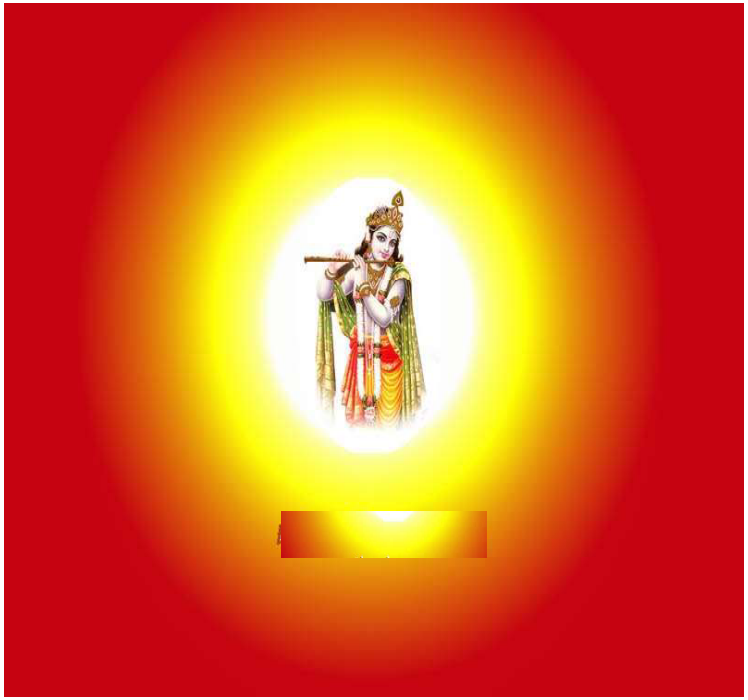

ओम हरि हर

ओम ओम की ध्वनि जब गूंजे, प्रीति उसी की दिल में उपजे।
मोह हरे स्वप्निल दुनिया सब, मिटते भय जो हरि को पूजे।
गाते गाते गीत उसी के, लय हो जाते इस मेले में।
चिन्ता मिटती अंखियाँ झरती, बस जाते जब हरि नयनों में।

चन्द्र 'प्रभाकर'

1

ओम हरी हर ओम हरी हर, हरि ही हैं इस जीवन के धन।
हरि बिन नीर बहायें अंखिया, बरसे ऐसे जैसे सावन।
बालक हरि का कुछ ना जानूं, नीर बहा बस रोना जानूं।
लाज रखेगा इस मेले में, सेवक हरि का यह मैं मानूँ।

ओम ओम की ध्वनि जब गूंजे, प्रीति उसी की दिल में उपजे।
मोह हरे स्वप्निल दुनिया सब, मिटते भय जो हरि को पूजे।
गाते गाते गीत उसी के, लय हो जाते इस मेले में।
चिन्ता मिटती अंखियां झरती, बस जाते जब हरि नयनों में।

जपते रहो न भूलो इक पल, सदा चाह मन उसका सम्बल।
सारे जग का वही रचियता, प्यार चाह मन उसका हरपल।
हरि हरि जप मन सदा सुमर तू, जाता जीवन अब ना भटके।
बीत जायेगी काली रैना, जप मन हरि में अमृत टपके।

2

ओम जप खिलता कमल, प्राण हो जाते मगन।
सकल चिन्ता त्याग कर, मन उसी का कर भजन।
ओम जप ले ओम जप, ओम ही जपते रहो।
शान्ति का सागर यही, दुख मिटें जपते रहो।

उस बिन न चैन आवे, जप मिल जायेगी छाया।
नाव तेरी पार हो, कर भरोसा खिवैया।
कितना भटको जग में, सूखते आंसू नहीं।
जपे जो भी ओम को, चैन मिलता सब कहीं।

नाव इसकी बैठ जा, दुख मिटे वह सहारा।
प्यार मन उससे बढ़ा, ओम का नाच सारा।
नयन को देखो उठा, सभी उसका नजारा।
ओम को जपते रहो, बह रही ओम धारा।

3

मन ओम जपो जप इसे लखो, मिट जाती सारी ही पीड़ा।
जप ओम लहर बन कर बह ले, सब जान उसी की है क्रीड़ा।
यह कठिन डगर मन ओम कहो, मन चाह शान्ति की ओम कहो।
सब मिल मिल यहाँ विछुड़ते है, तू एकाकी मन ओम कहो।

दरिया में लहरें भाग रही, सुपने सबके न रूकें कहीं।
मिल यहाँ विछुड़ जाते सारे, मन ओम जपो सब जगह वही।
जपता जा चलता जा मग में, दुनिया पागल है इक सुपना।
जो दर्द छिपा है सीने में, मन जान यहाँ क्या है अपना।

जप ओम ओम जप ओम ओम, जप बाहर भीतर ओम ओम।
मर्जी उसकी मन समझ ओम, आना जाना सब ओम ओम।
मन जपता जा है मार्ग यही, तू नहीं यहाँ सब जगह वही।
तू सौंप स्वयं उसके हाथों, मर्जी उसकी दे चैन वही।

4

क्या मेरा सब है तेरा, ओम जपें ओम ओम।
ले चलो किस्ती हमारी, प्यारे तुम ओम ओम।
नयन में आंसू हमारे, विछुड़ कर नाथ हारे।
जगत के तुम ही रचैया, बल दो पहुँचे द्वारे।

गीत हर पल उठें तेरे, सुगम पथ तुझे टेरे।
लाज को प्रभु राखना तुम, दूर करो तम घेरे।
मैं अबल अज्ञान में हूँ, ज्ञान मिले ओम ओम।
तुझे हम सुमरें सदा ही, भूले ना ओम ओम।

लहर हम सागर तुही है, बल लहर का तो तुही।
इक पल न भूले हम तुझे, देख ले संग में तुही।
नाथ कठपुतली तुम्हारी, नाचे हम मैं, हारी।
बरसे नयनों से आंसू, प्यार चाहूँ मुरारी।

5

बीत रहे दिन तुम ना आये, दिल को कैसे बता लगायें?
अंखियां नीर बहावे हरपल, चाहे प्यार तुम्हारा पायें।
पी पी रटूँ ध्यान हरि तेरा, काली रैना छिपा सुबेरा।
दास तुम्हारा भूल न मुझको, बहे नयन से मेरे धारा।

जीवन देने बाले दाता, तुम ही मेरे भाग्य विधाता।
बाट निहारूँ हरपल तेरी, चैन नहीं इस दिल को आता।
हरि हरि गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ, चाह यही बस तुझे मनाऊँ।
ढलती जाती है यह संध्या, तुझ चरणो में शीश नवाऊँ।

तोड़ी प्रीति भटकता जग में, घेरे तृष्णा मुझको मग में।
व्याकुल हो मैं तुझे पुकारूँ, थामों मुझे गिरा हूँ पथ में।
कठपुतली तेरी नाचे हम, फिर भी लगता जैसे हैं हम।
बिना कृपा न हटे अंधेरा, सम्बल दो ना मुझमें है दम।

हरि हरि जपे तुम्ही बल देना, ना मुझमें कुछ बरसे नयना।
लाज राखना इस मेले में, प्रीति बढ़े नित तुझमें बहना।

6

खिल कर यहाँ होवे विलय, मेरी हरी तुमसे विनय।
नयन में रहना सदा तुम, मेरी यही होगी विजय।
एक तुम ही हो सहारे, जग में हम जब भी हारे।
लाज मेरी राख लेना, शरणा हूँ तेरे द्वारे।

तुम बिना चैना न आये, तपस मग की जिय जलाये।
आंखों से बहता पानी, चाह तेरे चरण धोयें।
मुँह न मुझसे फेरना प्रभु, थक गया मैं मार्ग दूभर।
सब जहाँ के तुम्ही मालिक, आँख झरती यहाँ झरझर।

दीप मन्दिर में जलाऊँ, चाह तेरे पास आऊँ।
जी रहा अज्ञान में मैं, अबल हूँ कुछ कर न पाऊँ।
नीर बहते देख लो तुम, और क्या तुमको सुनाऊँ?
बालक तेरे माफ करना, व्यथा अपनी रो बताऊँ।

7

क्या है दुनिया क्या हैं हम, यह समझ न पाये गम।
बिन हरि की प्रीति मनुआ, खिल सकें इतना न दम।
अजनबी बन कर यहाँ बह, प्रीति किससे क्या करे।
क्या शिकायत है किसी से, वासना निज ले फिरें।

नाच कितना तू दिखाले, डोर उसके हाथ में।
सुरति मन उसकी लगा ले, ना डरे मझधार में।
बोल हरि हरि दुख मिटेगे, बन लहर बह ले यहाँ।
नाचता सागर यहाँ पर, जान बल कितना यहाँ।

चाह बस उसकी कृपा ही, ज्ञान उसके बिन कहाँ?
कर्म शुभ हो कर विनय यह, भूल हरि भटके कहाँ?
चल रही मर्जी उसी की, देख ले तू स्वयं को।
हरि चरण का दास बन जा, कर समर्पित स्वयं को।

8

प्यार तेरा सदा चाहें, देख लो हरि नीर बहते।
तुम बिना न शान्ति जग में, दिल तड़फता तुझे कहते।
खोजे तुमको प्रभु हम, सब तरफ छाया अंधेरा।
दीप जल जाये कृपा हो, तुम बिना न हो सुबेरा।

दो सहारा मांगते हैं, डगमगा रही है नौका।
बनो खेवट पार कर दो, पीठ न कर दे दे मौका।
अश्रु नयनों से बहें प्रभु, ना रूके बहते रहें यह।
तुम मिलो जब तक नहीं हरि, खोजते तुमको रहे यह।

दास तेरा तू सहारा, खो रहे स्वर पर पुकारा।
घूमता अनजान राहें, चाह बन जाऊँ दुलारा।
बरसें यह मेरे नयना, घट के वासी क्या कहना।
पर व्यथित हो कह रहा हूँ, मुँह न मुझसे मोड़ लेना।

मन मन्दिर में बिठा लूँ, बीते यह काली रैना।
बस जा नयनों में मेरे, डर लगे न चलता सुपना।
जानते हम ना किनारा, बह रही संसार धारा।
चाह पकडूं नाव तेरी, मैं अबल हूँ नाथ हारा।

9

तुम सर्जक तुम ही पालक, कौन मैं जो कुछ कहूँ प्रभु।
पीड़ जो दिल में उफनती, तुझ बिना किससे कहूँ प्रभु।
दास तेरे प्यार देना, बहते हैं मेरे नयना।
सृष्टि के मालिक तुम्ही हो, तप्त राहें छाँव देना।

न पता कोई तुम्हारा, खोजता मैं नाथ हारा।
अबल मैं बलहीन हूँ प्रभु, रो रहा तुमको पुकारा।
बैठ चरणों में तुम्हारे, नीर से मैं चरण धोऊँ।
पूछता अपनी खता को, मैं विछुड़ दिन रात रोऊँ।

दिल नहीं लगता हमारा, ना भटका मैं तो हारा।
लो शरण अपनी मुरारी, बहती नयनों से धारा।
पाप क्या है पुण्य क्या है, गणित सारा तुझे आये।
कैसे तोडू. कर्म बन्धन, जानूँ न बस नीर आये।

कर दया सब जीव घूमें, ना अकेला मैं यहाँ हूँ।
दिल तड़फता कह रहा बस, इस जगत का तू मही है।
प्यार देना प्यार चाहे, प्यार की भूखी मही है।
नयन में हरि बसो मेरे, चाह बस मेरी यही है।

10

प्यार करो हरि से पागल, नही लिपट दुनिया काजल।
माँग ना दे प्यार सबको, छायेंगे सुख के बादल।
जा रहे सब भागते हैं, देख ले कोई न पीछे।
किसे फुरसत राह देखे, क्यों न अपने नीर पोंछे।

पीड़ मन किसको दिखाये, दर्द ले सब बहे जायें।
पोंछ आंसू छोड़ आशा, जी ले मन हरि के साये।
जपो हरि को शान्ति देगा, बुझा भी दीपक जलेगा।
सब उसी का खेल जग में, जोड़ नाता साथ देगा।

साथ तेरे भूलता क्यों, भूल यह तुझको रूलाती।
नाचता सागर लहर तू, देख अन्तस क्यों न पाती।
उठ रही लहरें अनेको, जोर उनका देख कितना।
नाच सागर ही नचाये, छोड़ मैं को यहाँ बहना।

11

नाचते हो कर विवश सब, नाथ यह सब देख हारा।
घूमता अज्ञान में मैं, शरण तेरी मैं पुकारा।
नीर आंखों से बहें हैं, तुम बिना किसको कहें।
अर्चना के फूल सूखे, पीड़ा बता कैसे कहें।

लाज रखना दास तेरा, कुछ नहीं है नाथ मेरा।
ले यहाँ तृष्णा भटकता, जानता ना खेल तेरा।
पार नौका को लगाना, थक गया मैं नाथ हारा।
आ रही सांसे जो मेरी, स्वर बजे केवल तुम्हारा।

बह रही नदिया न जानूं, ले हमें कहाँ जायेगी।
सुरति तुझमें ही लगी हो, पीड़ा कम कर जायेगी।
शक्ति हरि देना हमें तुम, तुमको सदा जपते रहें।
याद तेरी ही लिये हम, चलते रहे नयना बहें।

देखता हरपल बदलता, क्या लिये अरमान चलता।
डूब जाऊँ बस तुझी में, डर मिटे फिर क्या है चिन्ता।
नयना बस जाओ मेरे, टूट जायें कर्म घेरे।
दास मैं तो हरि तुम्हारा, लो शरण न मुँह को फेरे।

12

जग से प्रीति करे दुख होई, हरि बिन अंखिया जी भर रोई।
बस अपने ना पकड़े सब कुछ, मैं मिटता मैं लेकर रोई।
कुछ पल का तू बना मुसाफिर, मन हरि जप ले जपता ही जा।
ज्ञान ध्यान सबका वह मालिक, सोंच उसी की मन तू झुक जा।

लहरें भागे हाथ न आये, हरि बिन कैसे मन समझाये।
लिये वासना सब ही अपनी, झिलमिल करती नाच नचाये।
हरि हरि जप ना और कहीं सुख, कैसे कैसे खेल खिलावे।
सुख दुख के पहियें पर घूमें, करो विनय हरि पार लगावे।

सत्य यहाँ सागर ना तू है, लहरें भटक भटक पर जावे।
विनय करो सागर ही सच है, ज्ञान मांग जिय ना तरसावे।
हरि बिन पार न होवे नौका, सत्य कहूँ पथ और न दूजा।
बसे नयन में मिटते सब भय, सुरति न छूटे मन कर पूजा।

13

दुख ना मिटते प्रीति बिना हरि, प्रीति बढ़ा दो करूँ विनय हरि।
बस जाओं मेरे नयनों में, प्राण पुकारें तुमको ही हरि।
अबल नाथ मैं अज्ञानी हूँ, कैसे तेरा ध्यान लगाऊँ।
ठगनी माया मुझे नचावे, खा खा ठोकर नीर बहाऊँ।

जीवन नदिया बही जा रही, ना छल कर मुझसे ओ छलिया।
दास बना ले मुझको अपना, दुख हर ले पड़ता मैं पैयां।
पी कर प्रेम प्याला तेरा, इस सारे जग के भूलूं गम।
तेरी दुनिया तू ही जाने, मुझे सहारा दे दो ना दम।

मान यहाँ अपमान यहाँ है, तड़फे जियरा छिपा कहाँ है?
पल पल रंग बदलती दुनिया, तुझमें ही आनन्द छिपा है।
मुझे पिला दे अपनी हाला, मिट जायें सब यह गम लाला।
किसके पीछे भाग रहा मैं, अन्धकार हर करो उजाला।

14

मांगता तेरी दया को, चाहता क्या जानता ना?
वासना ले कर भटकते, जानते अस्तित्व कुछ ना।
हरि कृपा रखना सदा तुम, बहता नयनों से पानी।
ना भुलाना याद अपनी, बीत जायेगी कहानी।

चल चल खाते हैं ठोकर, ज्ञान दो तो संभल जायें।
सृष्टि तेरे गीत गाती, लाज राखो शरण आये।
ना कभी तुम रूठ जाना, कर रहा पूजा जमाना।
पास में कुछ भी नहीं है, चाह तेरा प्यार पाना।

कर रही आँखें प्रतीक्षा, कब मिटेगी दुःख घड़िया।
ध्यान तेरे लीन हो कर, पाऊँगा विश्राम सैंया।
पथ तुम्हारे ही चले प्रभु, आँख ना मुझसे चुराना।
अबल हम अज्ञान में हैं, जब गिरें हरि थाम लेना।

15

हरि तुम राखो लाज हमारी, तुम बिन मेरा जिय अकुलाता।
कण कण में हरि तू ही बसता, जल में रह क्यों प्यासा फिरता।
अगम अगोचर पार न तेरा, मनुआ भटके खोजे डेरा।
अपनी दया बनाये रखना, नयन बसो हरि दास तुम्हारा।

घूम रहे हरि इस मेले में, तुम ही मेरे एक सहारे।
मेरी अंखियां नीर बहाये, सुनो न तुम फिर किसे पुकारे।
जीवन एक पहेली माना, चाहूँ भूलूँ गम रखबाला।
प्यास मिटे ना प्यासा हूँ मैं, मुझे पिला दे अपनी हाला।

सर्जक मेरे जीवन पालक, जियरा मेरा करता धक धक।
नमन करो स्वीकार हमारा, थक ना जाऊँ पहुँचू तुम तक।
जपें हरि अमृत वर्षा दे, सदियों की तू प्यास मिटा दे।
बहती नयनों से हैं गंगा, ढूंढ रही पथ उसे दिखा दे।

16

जप हरि जप हरि जप ले तू मन, और सहारा ना कोई है।
चाहत कितनी कर ले जग में, अंखियां नीर बहा रोई हैं।
जप हरि जप हरि जपता ही चल, कोई जग में नहीं किनारा।
हरि की मर्जी में जो बहता, मिटती फिकर नाचती धारा।

दर्द यहाँ दुनिया का क्या है, जो चाहे वह हो ना पाये।
दर्द करे स्वीकार यहाँ जो, नहीं शिकायत फिर रह जाये।
जप हरि मन है नही यहाँ कुछ, उसकी मर्जी से है आना।
मेला दो दिन का यह सारा, ले जाये कब किसने जाना।

हरि जप हरि जप चैन मिलेगा, टूटे दिल की वह ही आशा।
अंधियारी रातों में भी मन, जप ले उसको मिटे निराशा।
जप हरि जप हरि प्रेम बढ़ाले, मैं को मिटा रजा में बह ले।
कठपुतली तू जान उसी की, समझ इशारे उसके जी ले।

17

कितनी पीड़ा दर्द यहाँ है, तुम बिन मनुआ भटक रहा है।
इस जीवन को देने बाले, बतला तो दे छिपा कहाँ है?
कांटे बिखरे यहाँ धरा पर, फिर भी सुमन यहाँ खिलते हैं।
थोड़े से जीवन को जीकर, दे सुवास फिर वह मिटते हैं।

ऐसा ही हरि जीवन देना, सदा नयन में मेरे रहना।
प्रीति जगाओ बरसे नयना, बहूँ तुझी में तुझमें सोना।
नीर नहीं आंखों के सूखें, प्राण प्यार के हैं यह भूखे।
मेरे साहिल मुझे न भूलो, विनय करूँ मोहि रस्ता दीखे।

दिल मेरा बैचेन हुआ क्यों, मुझे सुना दे बंशी के स्वर।
दीन बन्धु तुम जग के पालक, लहराये करूणा का सागर।
हरि हरि करें अर्चना तेरी, करो उजाला रात अंधेरी ।
तुम बिन ज्ञान कहाँ से लाऊँ, अंखियां रोवे करो न देरी।

18

जो भी चाहें वह ना होवे, फिर भी तो हम ब्रह्म कहावें।
कण कण में जब बसा हुआ है, समझ सकें ना नीर गिरावे।
लहर विवश नाचे सागर में, सत्य लहर सागर कहलावे।
जोर यहाँ पर उसका कितना, बिना मिटे ना सागर पावे।

चल चल गिरते थकते टूटें, मृगतृष्णा पर सदा नचावे।
जो भी मिला उसे स्वीकारों, हरि जप वह ही पार लगावे।
लहरें भटक रही सागर में, ढूंढ़ रही अपनी मंजिल को।
नयनों के आंसू सूखे ना, पूछें कहाँ मिले सागर को।

चाह इस जीवन में हंसना, पर दिल रो बेहाल हुआ है।
तैर रहे आंखों में सुपने, इनको कोई लूट गया है।
तुम हो सागर हम है लहरे, करो सदा विनती सागर से।
नचा रहा तू ही हम सबको, ज्ञान हमें दो अलग न तुमसे।

19

हरि बस जाओ नयनों में, नहीं हेाना जुदा मुझसे।
तुम्हारा दास हूँ हरि मैं, नहीं हेाना खफा मुझसे।
लहर उठती यहाँ गिरती, खिलाता खेल कैसे तू।
बरसते आंख से आंसू, छिपा बैठा मदारी तू।

तुम्हारा प्यार पा जाये, खिल जाये मेरी बगिया।
बिना तेरे जहाँ सूना, नहीं लगता मेरा जिया।
नहीं बल मैं तुझे पाऊँ, मनाऊँ कैसे न जानूँ।
ढरकते नीर नयनों से, शरण तेरी यही मानूँ।

मुझे ले चल भुलावा दे, जहाँ मर्जी तू ले जाये।
बसे रहना नयन में तुम, विनय संग छूट न जाये।
तेरी पीता रहूँ मदिरा, यहाँ के सब भुला कर गम।
कट जायेगी रैना यह, न अपना प्यार करना कम।

20

जख्म इस दिल में लगे जो, किसे दिखलाये यहाँ हम।
पूछते यह नीर मेरे, चाह क्या आये लिये हम।
चाह थी तुम साथ चलते, हर कदम पर फूल खिलते।
ना मना पाये तुझे हम, भाग्य कैसा हाथ मलते।

लुट गया संसार मेरा, ना उठा कर आंख देखा।
बनते निर्मोही इतने, आँख में न प्यार देखा।
चलते खो जायेगे हम, ना करें शिकवा कभी भी।
पीड़ गीतों में छिपी जो, गुनगुना लेना कभी भी।

आता पीछे से रेला, छूटते सब कूल सारे।
दर्द दिल का यह रहेगा, हो सके ना तुम हमारे।
सांझ ढलती जा रही है, आ निशा लग जा गले से।
प्यार से वंचित रहा मैं, फिर कहेगे ना किसी से।

21

हरि भक्ति हरि कृपा से होई, जपता जा चाहे वह होई।
तेरे हाथों नहीं यहाँ कुछ, तुझकों हरपल नाच नचाई।
कितने देखे स्वप्न यहाँ पर, बने मिटे आंखे आई भर।
प्रीति लगा ले मनुआ हरि से, नहीं यहाँ रहना तेरा घर।

हरि हरि जपो ज्ञान वह देगा, ताप हरे शीतलता देगा।
पल पल रंग बदलती दुनिया, हरि बिन चैन नहीं आयेगा।
जप हरि साथ उसी का सांचा, दुख में देवे वहीं दिलासा।
अंधकार के बादल में फंस, तड़फे जियरा लिये निराशा।

हरि जप हरि जप मन जपता जा, नयन बहें पर छोड़ उसे ना।
फूल खिलेंगे इस जीवन में, तज हरि ना जीवन है सुपना।
किसकी पागल करे प्रतीक्षा, भागे लहर हाथ न आये।
हरि में खेले हरि में जीवे, अन्तस में जा हरि लहराये।

22

हरि मैं तुमसे प्रीति बढ़ाऊँ, मिटा अंधेरा दीप जलाऊँ।
आधि व्याधि ने तन को घेरा, दुख हरो मैं तुझे मनाऊँ।
जगत पालक तुम्ही सहारे, बुद्धि बल मैं सभी से हारा।
पार लगा दो मेरी नौका, अश्रु नयन में कर उजियारा।

नाच नचाये होनी हरपल, सारी दुनिया करती झिलमिल।
इस मेले में कहाँ खो गया, चैन न आवे गिरे नयन जल।
जीवन तेरा कुछ ना मेरा, चाहूँ इतना छटे अंधेरा।
तुझे उचारे मेरी सांसें, प्राण कहें बस तू है मेरा।

जनम जनम से दास तुम्हारा, जानूं न मैं ठिका तुम्हारा।
कण में तुम बसे हुए हो, नयन बहावे जल क्यों खारा।
अपनी दया बनाये रखना, बहते नयन यही बस कहना।
अज्ञानी हम स्वामी हो तुम, प्यार हमे दो प्यासे नयना।

सुमरे हरि को चिन्ता छूटे, सोंच मिटे मन हरि को जप ले।
दुख भंजक सब सोंच मिटेगी, कर विश्वास हरी मन जप ले।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान का वह ही मालिक।
बनो लहर नाचों सागर में, छिपा वही जप पहुंचों उस तक।

23

किस कोने में बैठे हरि तुम, जग को नाच नचाते फिरते।
दिल को यहाँ लगाते फिरते, टूटे दिल आंसू फिर गिरते।
जीवन नदिया बहती जाती, नये नये नित सुपने बुनती।
क्षण में सबकी होली जलती, ठगनी माया पर ना थकती।

इतनी पीड़ा दर्द यहाँ है, ना पसीजता तेरा दिल क्यों?
तू भी हमसे दूर हुआ है, खोज रहे फिर भी तुमको क्यों?
इस विशाल जंगल में खोजें, चल चलकर फिर गिर गिर जावे।
अंखियां खोजे एक सहारा, और न कोई तुम बिन पावे।

लाज राखना इस मेले में, अंखियां रो बेहाल हुई है।
निष्ठुर ना बन इतना छलिया, इस मेले में ठगी हुई है।
अब तो तेरा एक सहारा, दुख दे सुख दे तेरी मर्जी।
नयना रोते तुझे पुकारे, सुन ले अब तो मेरी अर्जी।

हरि हरि ध्यान करे हम हरपल, चाहूँ इसमें बढ़ता जाये।
हरी नाम की पी कर मदिरा, सभी भूल गम लय हो जाये।
दया तुम्हारी चाहें हरदम, बना अजनबी अब ना सोवे।
थाम मुझे ले हाथ बढ़ाकर, ढलता दिन अंखियां यह रोवे।

24

सुनो हरि हर तुझे बोले, नगमें गा तेरे जी ले।
सदा तू ही यहाँ है सच, तेरी मदिरा हम पी ले।
मिटे अज्ञान जो घेरे, सुने वंशी के स्वर तेरे।
बढ़ा दे हाथ अपना तू, मिले पथ दास हैं तेरे।

लगा दे पार यह नैया, नहीं कोई खिवैया है।
ढरकते नयन से आंसू, मेरे जीवन की आशा है।
तुम्हारा प्यार जब मिलता, उमड़ते नयन में बादल।
तन मन होता सब पावन, बहे धारा वह गंगाजल।

नयनों में मेरे आंसू, लिये वह याद चलते है।
सहारा बस मुझे इनका, यही तो पास लाते है।
बहे नयनों से यह गंगा, नहीं हरि भूल जाना तुम।
मेरी सांसों में बहना, नहीं पल भर विलग हो हम।

25

हरि हरि सुमरे हरि मनावें, हरि ही तो अज्ञान भगावे।
मेरे देव हरि तुम न रूठो, तुम बिन ज्ञान कहाँ से आवे।
चल चल थकता भूलूं सजदा, कैसे मन को चैना आये।
पाप पुण्य सुख दुख की भाषा, समझे ना आंसू ढरकाये।

उठे लहर सागर में गिरती, आशायें कितनी ले चलती।
स्वप्निल सी सारी यह दुनिया, मोह नहीं फिर भी यह तजती।
ज्ञानी ना मैं कुछ भी जानूँ, प्यासा हूँ मैं मांगू पानी।
प्राण पुकारे मेरे तुमको, छिप ना मेरे औघड़ दानी।

जप ले हरि मन प्यास मिटावे, तड़फे जियरा तू अकुंलावे।
सकल सृष्टि का वह ही मालिक, पकड़ चरण तू क्यों सकुचावे।
जप ले हरि पथ बने सुगम सा, आया जगत न मंजिल जाने।
नयन बहावे हरपल पानी, पागल बन न घूम दिवाने।

हरि बिन पीड़ा किसे दिखाऊँ, अज्ञानी मैं जान न पाऊँ।
इन नयनों से बहता पानी, गहरी कीचड़ उवर न पाऊँ।
बस कुछ ना हरि चलती तेरी, दुख हर लो कठपुतली तेरी।
जनम जनम का दास तुम्हारा, पार लगा दो नैया मेरी।

26

मेरे मन्दिर में हरि बसना, दिल के सुमन चढ़ाऊँ।
ज्ञान ध्यान तुम सबके मालिक, हरि सुवास मैं पाऊँ।
जीवनदाता जीवन तेरा, ना गुमान में जाऊँ।
नीर बहे जो इन अंखियों से, तेरे चरण चढ़ाऊँ।

तुम बिन कृपा चला ना जाये, अपना शीश झुकाऊँ।
नैया मेरी खे दे खेवट, आंसू हार चढ़ाऊँ।
अज्ञानी अनजानी गलियां, ज्ञान कहाँ से लाऊँ?
अबल नाथ मैं जग के स्वामी, चाह प्यार को पाऊँ।

हरि हरि सुमरें तुमको ध्यावें, गीत तुम्हारे गाऊँ।
अन्तर्यामी जग के पालक, निज पीड़ा दिखलाऊँ।
शरण राखना हरि तुम अपनी, नीर करे यह पूजा।
सदा हमारे दिल में रहना, तुम सा और न दूजा।

27

क्या पाना और यहाँ खोना, पगले पीड़ा को तो हरना।
अंधियारी रात डराये जब, मन में हरि को जपते रहना।
पल पल में रंग बदलते है, स्वप्निल सारी है यह दुनिया।
किसको पकड़े किसको छोड़े, मिटता तन कर ले याद पिया।

हरि जप मर्जी उसकी चलती, देता विवेक बुद्धि चलती।
हरि बिन तड़फे ना चैन मिले, कितनी जग में करले गिनती।
करूणा का दीप जला दिल में, करूणा सागर वह कहलाता।
जैसी भी तेरी पूजा हो, मन जान वही वर मिल जाता।

हरि नयन बसा ले प्यार बढ़ा, प्यारी यह सारी दुनिया है।
जो हुआ समर्पित हरि हाथो, खेले रोवें ना अंखियाँ है।
हरि जप हरि जप है शान्ति वहाँ, प्यासे को पानी मिले वहाँ।
बैचेन लहर काहे बिलखे, अन्तस में सागर छिपा यहाँ।

28

ताप हरे सुख पावे जिवड़ा, हरि हरि जप वह प्रियतम प्यारा।
जो भी उसकी शरण गया है, मिटते भय ले जाती धारा।
नयना भीगे, गा हरि को मन, दिल का वह ही सुमन खिलाये।
आनी जानी इस दुनिया में, कातर बन क्यों समय गवाये।

आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में भूल तड़फता।
जो सुमरे हरि को हरपल है, स्वीप्निल दुनिया डर ना लगता।
और न सांचा साथ जगत में, छूटे जाते सभी सहारे।
पीता जो उसकी मदिरा को, नयन बसे मिटते दुख सारे।

जप ले हरि को चैन मिलेगा, दन्श तेरे सब वह ही हरेगा।
सारे जग का वह ही मालिक, जला दीप हरि, तिमिर मिटेगा।
जपता जा मन कभी न थकना, साथ जान ले तेरे सजना।
हरि बिन सफर महादुखदाई, खोल आंख जीवन है सुपना।

29

जप ले हरि को वह दुख भंजक, नहीं कटेंगे उस बिन संकट।
दौड़ लगा ले जग में कितनी, ताप हरे जप नैया खेवट।
जप ले हरि जपता ही जा, स्त्रोत यही सुख का पागल मन।
अंखियां बरसे, खिले कमल पर, जो जपता हरि को हरपल मन।

सांस सांस में हरि को जपलो, देखो दुनिया चुप हो जी लो।
अपना कौन पराया जग में, लीला उसकी वन्दन कर लो।
जग में दौड़े किसके पीछे, अंखियों के तू नीर दिखावे।
जप हरि को मन शान्ति मिलेगी, उसके बिन ना चैना आवे।

आशायें कितनी ले पकड़े, नयना भी यह रिमझिम बरसे।
पकड़ ना आये कोई यहाँ, चाहत को लेकर दिल तरसे।
बहती लहर लिये चाहत को, अन्तस खोजे ना सागर को।
छोड़े चाहत खोजे सागर, घूमे जग में लेकर पिव को।

30

लहर न खोजे अन्तस सागर, मिटती भटकन हरि की माया।
हरि का जिसने जाम पिया है, दुख मिटते रोवे ना काया।
सुमरण हरि का मन करता चल, सारी दुनिया करती झिलमिल।
पल पल में हैं रंग बदलते, नाम जपो यह दुनिया स्वप्निल।

जुड़ी रहे अन्तस सागर से, डर नहीं लहर को कहीं रहें।
सब ओर नाचता सागर है, उसकी मर्जी जिस ओर बहे।
पल भर भी ना भूले सागर, जप ले सदा यही है अमर।
कुछ पल का है खेल हमारा, बरसें नयना हैं यह झरझर।

आये यहाँ कहाँ को जाये, पल पल में जियरा घबराये।
हरि का नाम एक है सांचा, जप जप हरि में लय हो जाये।
जप लो हरि को आंखे खोलो, बीत रही कुछ बीत गई है।
हरि यादों में बरसें आंसू, नित होती फिर सुबह नई है।

31

अनजानी डगर जाये किधर, तुम कृपा करो हरि दो रस्ता।
अज्ञानी हम दो ज्ञान हमें, नयनों से जल मेरे गिरता।
कण कण में यहाँ विराजे तुम, जल में रह कर भी प्यासे हम।
सूनी दुनिया लागे मुझको, ना छिपों प्यार को दे दो तुम।

सूखी पत्थर सी आंखों में, कैसे मैं फूल खिलाऊँगा।
झरने दे करूँ यही विनती, बह कभी तुझे तो पाऊँगा।
हरि हरि जपते रस्ता तकते, मैं चाह रहा तेरा साया।
क्यों रूला रहा मुझको इतना, मैं शरण नाथ तेरी आया।

तपती धरा बैचेन है दिल, क्यों विछुड़ गये कटते ना दिन।
इस रंग बिरंगी दुनिया में, लागे सब नीरस हरि तुम बिन।
हरि हरि बोले तुम बसो नयन, सुमरण तेरा कर लय होवें।
हरि हार गया मैं कृपा करो, तुममें जागे तुममें सोवे।

करूणा के सागर कहलाते, तुमसे ही सब जीवन पाते।
क्या दोष हमारा कह दो तुम, मर्जी तेरी सांसे पाते।
मैं दास तुम्हारा न ठुकरा, मन्दिर अपने हरि रख लेना।
जायेगी ढल यह भी संध्या, अपना हरि प्यार मुझे देना।

32

जप ले हरि को मन जपता जा, ना और सहारा मत ठुकरा।
सुख शान्ति छिपी मन स्त्रोत यही, मन का खिल जाता है जियरा।
जब साथ यहाँ सारे छूटे, कहते हारे रोवें अंखियां।
हरि याद करे फिर नयन झरे, प्यारी लागे उससे बतियां।

जपले हरि यह दुनिया स्वप्निल, छट जाते है दुख के बादल।
नयनों में हरि की प्रीति बसे, आंखे ना फिर होती बोझिल।
नभ मौन यहाँ कुछ ना बोले, मर्जी तेरी जैसे जी ले।
प्राणों की प्यास समझ ले क्या, विछुड़े उससे कैसे पा ले।

सारी दुनिया करती झिलमिल, लहरें भागे खोजे रसिया।
अन्तस में सागर छिपा हुआ, बाहर दौड़े न मिले छलिया।
जपता जा हरि में ध्यान लगा, सांचा ही कहूँ तेरा पिया।
कर देगा नाव पार तेरी, जप ले हरि को ना जला जिया।

33

बह ले मन बह हरि में खोजा, सब रंग बदलते पकड़े क्या?
उबले जब इस मन में पीड़ा, फिर देख हाथ में तेरे क्या?
हरि चरण बिना ना ठौर कहीं, जग में भटके ठोकर खाये।
हरि बिन मन समझ नहीं पाये, हरि सुमरे शान्ति यहाँ पाये।

हरि प्यार मिले फिर नयन झरे, सारे जग का वह रखवाला।
हरि भूल घूमते मैं को ले, ना मिटे जलन जलती ज्वाला।
वह आदि सत्य है अन्त सत्य, ना भूल उसे अब शाम ढले।
क्यों वर्तमान में उसे तजे, जपले हरि को दिल कमल खिले।

जीवन यह एक पहेली है, सुख दुख यह सभी सहेली है।
कठपुतली बन हम नाच रहे, अपनी मर्जी क्या चलती है।
जप कर मन विनती करो यहीं, तम हरो उजाला करो मही।
बालक तेरे शरणा तेरी, दो प्यार हमें ले चलो कही।

मन ज्ञान ध्यान का मालिक वह, जो समझ मिले जीवे उसमें।
हरि बिन कह ज्ञान मिले कैसे, सुमरे जाने सब हरि बस में।
प्रियतम प्यारा मन का रसिया, पी जाम खिले तेरा जीया।
जप प्रीति डोर में बांध उसे, क्या अपना वह देगा छैयां।

34

हरि हरि सुमरो जग में जी लो, सब ज्ञान ध्यान का मालिक है।
मैं हटा जपे जो हरि को है, बन लहर यहाँ वह बहता है।
मन करो समर्पण हरि को ही, सब खेल उसी का चलता है।
मर्जी उसकी आना जाना, कुछ पल का ही तो मेला है।

कल बीता क्या कुछ तेरा है, यह जोगी बाला फेरा है।
हरि की दिल में जब प्रीति बसे, बरसे नयना सब हरि का है।
अनजान लहर बह चले किधर, न जान कोई जग में पाया।
सागर में नाच रही लहरे, ना लहर यहाँ सागर छाया।

तू कौन याद कर ले हरि को, सुखकर्ता वह दुख भंजक है।
हरि हरि जपले उसकी लीला, कण कण में वह ही बसता है।
निर्मोही बन जग में जी ले, क्या मोह करे क्या तेरा है।
बन लहर यहाँ सागर में बह, सब ओर उसी का घेरा है।

35

हरि सदा जपते रहेगे, नयन से आंसू बहेंगे।
पायेंगे इसमें सब सुख, खोजते तुमको रहेगे।
क्यों यहाँ आये यहाँ हम, तेरे बिना ना हम रहें।
ले रहे सांसें यहाँ क्यों, तेरी कृपा को हम चहे।

प्यार आंखों में समाया, तुम बिना कुछ भी न भाया।
जलन ना मिटती हमारी, नयन में है नीर आया।
सांस यह जपती रहेगी, तुम हो निर्मोही छलिया।
आंख पथ देखें तुम्हारा, आयेगी कब मिलन घड़ियां।

अश्रु को स्वीकार कर लो, अज्ञान में है ज्ञान दो।
तुम जगत के हो रखैया, पार मेरी नाव कर दो।
हरि सेवक मैं तुम्हारा, इस जग से मैं हूँ हारा।
चाहता तेरी कृपा हूँ, अंखियों से बहती धारा।

36

चाहत तज बह सागर में मन, चलती सागर की समझो मन।
अपना तेरा क्या सोंच समझ, नाचे कठपुतली सा तू बन।
जपे हरि हरि तेरा साहिल, अंखियां फिर ना होगी बोझिल।
दो दिन का यह रैन बसेरा, क्यों उलझ उलझ होता पागल।

मन जपो हरि कट जाये सफर, दन्श जगत के नहीं सतावे।
हरि ही खेले नाचों इसमें, तज मैं को फिर हरि ही पावे।
हरि हरि बोलो उसकी लीला, यहाँ कर रहा वह ही क्रीड़ा।
लहर फिरे ले अपनी दुनिया, दौड़े भागे ले ले पीड़ा।

हरि हरि जपो मिलेगा चैना, जान न कोई और ठिकाना।
बैठ इसी नौका में तू मन, बह ले मन इसमें ही बहना।
झरते आंसू फूल बनेगे, दिल में तेरे कमल खिलेंगे।
अपना कौन पराया जग में, द्वैत मिटे हरि साथ रहेगे।

37

जपो हरि को द्वन्द सभी तज, सारे जग पर वह ही छाया।
जिसके दिल में हरि बस जाता, दुख पाती ना रोवे काया।
अपना कौन पराया जग में, रोवे और करे मन मैला।
कुछ पल मेला सुपना दुनिया, जपले हरि के हरि क्यों भूला।

हरि हरि जपो यहाँ सुख पाओ, बहती धारा में बह जाओ।
साथ छोड़ता जाता तन भी, कितना भी तुम इसे बचाओ।
जप हरि हरि तू सुपना दुनिया, पागल मन ले ले तू छैया।
जप हरि चैन मिलेगा तुझको, डर बिन पार लगेगी नैया।

हरि हरि सुमरो साथ वही है, नजर उठा हर जगह वही है।
मैं की हरपल होली जलती, सागर नाचे लहर नहीं है।
लहर बहे क्या उसका अपना, नाचे सागर सब है सुपना।
लहर जपे मिट देखे सागर, बहती जाये फिर क्या कहना?

हरि हरि बोलो साथ उसी का, संग और सब छूटे जाये।
किसके पीछे पागल दौड़े, साथ न तेरे कोई जाये।
लिये लहर भागे निज सुपना, हरि को भूले छोड़े जपना।
लहरें भाग रही सागर में, जाती विछुड़ कौन है अपना।

जप हरि हरि बरसेंगे नयना, अन्तर्यामी कुछ ना कहना।
कठपुतली हम नाच दिखायें, अन्तस वह ही सुरति न तजना।
हरि हरि जप मन शान्ति मिलेगी, गोद उसी की सदा मिलेगी।
जैसा राखे उसकी मर्जी, सांच कहूँ बस चुभन मिटेगी।

हरि गाता जा बहता जा मन, स्वप्निल यह सारी दुनिया है।
हरि की दुनिया हरि ही जाने, मैं छोड़ो फिर सुख मिलता है।
हरि हरि कहो उसी में भीगो, बहता जीवन उसमें बह लो।
डोर उसी के हाथों में हैं, सुरति लगा मन तप तुम कर लो।

38

कौन हो तुम कुछ कहो तो, कौन मैं जो भटकता?
अश्रु यह अंखिया गिराती, प्यार को मैं तरसता।
छोड़ कर मुझ को अकेले, छिप गये हो किस जगह?
तुम बिना नहीं चैन आये, चरण में दे दो जगह।

दीप तेरा मैं जलाऊँ, आरती तेरी करूँ।
मैं करूँ सुमरण तुम्हारा, छोड़ सब तुमको बरूँ।
तुम कृपा रखना सदा ही, अबल हम अज्ञान में।
घूमते अनजान गलियाँ, खोजते संसार में।

तुम प्रभु करूणा के सागर, ज्ञान दो भरे गागर।
नयना बस जाओ मेरे, ना सताये मुझे डर।
तेरी मदिरा को पीकर, भूलूँ मैं सारे गम।
मुझे इतनी शक्ति देना, मैं अबल कुछ भी न दम।

39

सदा हम तुमको मनाये, दे दो अपनी छैंया।
स्वप्निल तेरी यह दुनिया, चाहें पकड़े बहिया।
बहते क्यों मेरे आंसू, बता दो तुम जग मही।
आज है हम तो यहाँ पर, पता कल का है नहीं।

जगत में कांटे बिखेरे, फूल भी हैं खिलाये।
प्राणों का तू ही प्यारा, तुम बिन न चैन आये।
लाज मेरी राखना हरि, अनजानी यह गलियां।
पार करो मेरी नौका, तुम्ही मेरे खिवैया।

करूणा के तुम हेा सागर, खाली मेरी गागर।
ले इसे नाचूं भरो तुम, बह रहे हैं नीर झर झर।
बालक प्रभु हम तुम्हारे, ना कभी दूर होना।
एक सम्बल है तुम्हारा, पास में सदा रखना।

मर्जी चलती तुम्हारी, मर्जी तेरी आये।
बह रहे हैं नीर लखना, चाह दिल में समाये।
प्यार में रंग रंगीले, सारे ही भीगे हम।
मुझको अच्छा यह लगता, दूरियां हो जायें कम।

40

नयन से मेरे नीर गिरते, नहीं निकल जाये दम।
चुप रहो नहीं, कुछ तो बोलो, चाहते तेरा प्यार हम।
प्यारी है दुनिया तुम्हारी, नयन से पर अश्रु जारी।
तुमको बता कैसे मनायें, इस जग से मैं हूँ हारी।

दास तुम्हारे अबल हम तो, शक्ति के भण्डार तुम तो।
तुम देख लो नजरें उठा कर, प्राण प्यासे मेघ तुम तो।
मैं आ गया शरण में तेरी, लाज को रखना मुरारी।
जाये बढ़ती प्रीति नित हरी, न कभी भी करना दूरी।

हरि नयन में आंसू हमारे, द्वार तेरे हम खड़े हैं।
चाह रहे तेरी कृपा को, नीर अंखियों से झरे हैं।
हरि तेरी मदिरा को पीकर, जाये खिल मेरी बगिया।
हरि नीर मेरे फूल बन कर, महकायें तेरी दुनिया।

41

क्या कहें किसको यहाँ हम, घुट रहा तेरे बिना दम।
आँख में आँसू हमारे, मिले कैसे अबल हैं हम।
बहुत भटके इस जगत में, ना बुझी पर प्यास मन की।
कितने जन्मों का प्यासा, आ कर मिलो सुनो मन की।

सृष्टि के तुम हो रचैया, चाहें हम तेरी छैंया।
नयना बस जाओ मेरे, थामों अब मेरी बहियां।
हरि जपें भूले न इकपल, सब जगत की प्रीति झूठी।
प्रीति तेरी हरि बढ़े नित, तुम बिना खुशियाँ हैं रूठी।

हरि जपें जप चैन आवें, तुम बिना ना शान्ति आवे।
तुझे हम कैसे मनावें, दो हमें पथ शाम जावे।
कर कृपा हरि ज्ञान दे दो, ज्ञान के भण्डार हो तुम।
मान जाओ करे विनती, प्यास जन्मों की तुम्ही हो।

42

जगत पिता तुम सबके पालक, नीर गिरे मैं तेरा बालक।
कहाँ छिप गये मुंह ना मोड़ो, अंखियां हारी रस्ता तक तक।
अबल प्रभु मैं दास तुम्हारा, पार लगा दो मेरी नैया।
मंडराते तृष्णा के बादल, बरसे रिमझिम मेरी अंखियां।

चले बहुत पर चल न पहुँचे, ठगनी माया रस्ता रोके।
फैला कैसा जाल यहाँ पर, बहते आंसू कैसे रोके?
तेरी लीला बड़ी निराली, खोज खोज कर दुनिया हारी।
प्यास नहीं पर मिट पाती है, चाहें कृपा सभी संसारी।

मृगतृष्णा में ना उलझाओ, हरि तुम अपना प्यार बढ़ाओ।
सासों में स्वर गूंजे तेरा, मेरे नयनों में बस जाओ।
पल पल रंग बदलती दुनिया, तू मुझसे छल कर ना छलिया।
दास तुम्हारा प्यार हमें दो, सदा चाहते तेरी छैंया।

43

हरि हरि जपें हरो दुख सारे, इस जीवन को देने वाले।
शरण तुम्हारी आया हूँ मैं, मुँह न फेरना ओ मतबाले।
गये रूठ क्येां मोहन मुझसे, आये मुझे न पल भर चैना।
बीते तुम बिन काली रैना, आंसू बहते मेरे नयना।

थक थक गिरूँ तुझी को खोजूँ, बहे नयन चरणो को सींचू।
बसो नयन में हरि तुम मेरे, सदा रहो अंखियों को मीचूं।
हरि हरि जप मन को समझाये, स्वप्निल सब कुछ मिटता जाये।
प्रीति तुम्हारी बढ़े निरन्तर, ना सुपने में फिर दुख पाये।

सावन आये कोयल कूके, कौन तेरे बिन मोहि बूझे।
आंसू मेरे लख लो रसिया, प्यार हमे दो रस्ता सूझे।
निरखूँ हरपल रूप तुम्हारा, मेरे नयनों से ना जाओ।
इस जीवन को देने वाले, विनय प्यार को खूब बढ़ाओ।

44

मन रोया पर तुम नहीं मिले, जीवन में कैसे फूल खिलें।
अज्ञानी भटक रहा बालक, चाहूँ मैं तेरा प्यार मिले।
मेरे जीवन के तुम सर्जक, अंखियां यह नीर बहाती क्यों।
तुम बिन सूनी दुनिया लागे, मैं पांव पडू. रूठे हो क्यों?

दो बून्द प्यार की पाने को, हम तरस गये पर ना पिघले।
जीवन यह सांसे लेता क्यों, हम छले गये छलिया निकले।
तेरी यादों में रैन कटे, हम जपे निरन्तर सब कुछ तज।
इतना तो तुम हरि कर देना, ना नीर खतम हों तुमको भज।

मैं अबल सहारा तेरा ही, अनजान डगर जानूं न कुछ।
सब ज्ञान ध्यान के मालिक तुम, देखूँ तुझ ओर बता दे कुछ।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, हरि तू ही तेा मेरा सुपना।
मेरे नयनों में बस जाओ, मैं खड़ा द्वार बस यह कहना।

45

हरि मन बहलाऊँ मैं कैसे, तुम ही रूठ गये जब मुझसे।
अंखियां मेरी नीर बहावे, खता हुई क्या कह दे मुझसे।
ठोकर खा खा जग में भटके, नीरस जीवन रस ना बरसे।
कठपुतली हूँ नाथ तुम्हारी, प्यार हमें दे जियरा हरषे।

जियरा मेरा आता भरभर, देखूँ रस्ता मिल ना पाता।
प्रीति हमारी झूठी है क्या, पूंछू तुम से भाग्य विधाता।
पार लगा दो मेरी नैया, तुम बिन और न कोई दूजा।
मेरे जीवन की तुम आशा, सृष्टि करे यह तेरी पूजा।

आदि सत्य तू अन्त सत्य है, वर्तमान का तू ही राजा।
नमन करो स्वीकार हमारा, प्राण पुकारे तू अब आ जा।
जपे हरि हरि मन होवे चंगा, बहे नयन से पावन गंगा।
सब कुछ भूलं बहूँ मैं इसमें, अपने प्यार में रंग ले रंगा।

46

निशदिन बरसत नयन हमारे, आ मिलो मोहि प्रीतम प्यारे।
तुम बिन जियरा नाहिं लगत है, कैसे समझाऊँ मन प्यारे।
कैसे पाऊँ अबल नाथ मैं, हरि हरि जपूँ तुझे ही पूजूँ।
चाह प्यार तेरा मैं पाऊँ, जल थल नभ में तुमको खोजूँ।

प्यार मिले खिल जाये बगिया, मानो भी पड़ता मैं पैयां।
जनम जनम का दास तुम्हारा, नीर बहावे मेरी अंखियां।
तुम बिन जीना हरि क्या जीवन, अंखियां बरसें जैसे सावन।
प्रीति करूँ मैं जग में किससे, सभी सुनावें दुखड़े गिन गिन।

तेरी लीला हरि सब नाचे, चाहूँ अपना प्रेम बढ़ावे।
स्वप्निल दुनिया रंग बदलती, तेरा सुपना मन को भावे।
हरि हरि जपे न कोई दूजा, स्वीकारों प्रभु मेरी पूजा।
दन्श जगत के भूल यहाँ पर, गाऊँ गीत नयन में बस जा।

47

आश्वासन मिलते यहाँ बहुत, सुपने चाहत के यहाँ बहुत।
जलती होली हमने देखी, फिर भी न संभले यहाँ बहुत।
ना यहाँ ठिकाना कोई थिर, जी ले जग में बन्जारा बन।
हरि ज्योति जला ले पागल मन, मिटता अंधियारा होता दिन।

ठुकरा ना हरि एक सहारा, हरि जप हरि जप जपता ही जा।
नाच रहे जो भूत प्रेत है, उसे मिटाता जा जपता जा।
सोंच मिटे सब ज्योति जले हरि, मनुआ उसमें खूब रमे फिर।
मिट जाता मैं रह जाता वह, मन हो जाता पार गमें फिर।

हरि हरि जप वह ताप मिटावे, टूटे दिल की औषधि है वह।
करें किनारा रोवे दिल जब, दीप जलावे आशा का वह।
हरि हरि जप ले पागल मनुआ, देख यहाँ तू सुपना दुनिया।
लहरें भाग रही निज धुन में, पकड़ न आये नाचे दरिया।

छिपा हुआ दरिया लहरों में, सब ओर नजारा उसका है।
मैं भुला मुक्ति का मार्ग यही, जानो नाचे वह छलिया है।
हरि हरि जप ले मन प्रीति बढ़ा, आंसू बहते वह उसे चढ़ा।
उसकी मर्जी आना जाना, तू कौन यहाँ वह साथ खड़ा।

48

ढल रही है शाम अब तो, क्या कहें किसको यहाँ पर।
आ रही है सांस कुछ पल, ना पता जाये किधर फिर।
प्राण यह प्यासे तरसते, मन पिला दे हरी मदिरा।
सत्य मन वह ही सदा है, खिलता मुरझाया जियरा।

हरि जपो उलझो न जग में, चल रहा मन जान सुपना।
कौन अपना है पराया, मिल सभी को है विछुड़ना।
प्रेम गंगा में बहो नित, प्राण प्यासे है सभी के।
जो नहीं अपने यहाँ बस, छोड़ मैं गा गीत हरि के।

हरि जपो मन देख ले जग, हरि बिना ना चैन आये।
मुरझाई तेरी बगिया, जप खिले मन चैन आये।
जपो हरि का नाम सांचा, तपती धरती वह आशा।
जब सताये दन्श जग के, सुमर हरि भागे निराशा।

49

पियूं मैं नाम की मदिरा, चरण पड़ रो रहा सैयां।
अकेले छोड़ कर मुझको, छिपे क्यों लो पकड़ बैयां?
बुलावें हम तुझे हरपल, बहें यह नीर प्रभु हरदम।
कहाँ खोजे पता न कुछ, बिना तेरे न निकले दम।

तुम्ही हो सत्य जीवन में, दुनिया सारी फानी है।
मेरे रोते यह नयना, बता दे क्या कहानी है?
लगेगी पार यह नैया, डगर अनजान है तो क्या?
बसो इन नयनों में मेरे, डरेगा फिर नहीं जीया।

जपे हरी जायेगा पथ कट, जगत की तू कहानी है।
मेरे पालक तुम सर्जक, तुम्हारे हम बालक है।
दया रखना सदा हम पर, यह अनजानी जग गलियाँ।
तुझे कर याद जिय रोये, प्रभु तू दे दे अब छैंया।

50

हरि हरि जप मन प्रेम बढ़ेगा, बन बन्जारा कुछ न घटेगा।
आनी जानी इस दुनिया में, प्रेम बढ़े हिय कमल खिलेगा।
हरि हरि जप ले लहर बना तू, लहर नहीं अन्तस सागर तू।
सब कुछ सागर नहीं यहाँ तू, सुरति लगे भ्रम मिटे जान तू।

हरि हरि जपे न हरि को भूलें, उसकी यादों में ही खोवें।
जग से प्रीति करें क्या बोलो, नयना मेरे पल पल रोवे।
सागर रूप नाचता छलिया, माने ना दिल रोवे अंखियां।
ठगनी माया नाच नचावे, संग तेरे मन जप ले छलिया।

फिरें अकेले भरी भीड़ में, लाज रखेगा हरि मेले में।
अन्तर्यामी सबकी जाने, हरि बिन दर्द मिटे न दिल में।
हरि बस जाओ इन नयनों में, तड़फा बहुत न अब तड़फाओ।
चल चल हारा रोये नयना, हरि नित अपनी प्रीति बढ़ाओं।

51

यह बह रही है जिन्दगी, लिये है सुपने अनेकों।
टूटते जब यह बिलखती, रंग कितने ही अनेकों।
चैन आये नही हरी बिन, पागल बना मन भटकता।
जप सहारा ले हरि मन, क्यों उस बिना तू तड़फता।

स्वप्निल दुनिया है सारी, भागते पागल यहाँ बन।
कुछ पलों का खेल खेले, नीर गिरें जैसे सावन।
प्राण की तो प्यास वह ही, सत्य तो वह ही सदा है।
नाम हरि जिसने लिया है, सहज वह जीवन जिया है।

मन हरी जप सहज बन जा, खेल उसका चल रहा है।
मान कठपुतली हरी की, जान सच क्यों रो रहा है।
नाच ले बन कर लहर तू, नाचता सागर यहाँ है।
छिपा सागर देख अन्तस, तू नहीं सागर यहाँ है।

52

सांस तेरा गीत गायें, चाहें जीवन में छाये।
नीर बहते हैं नयन से, न कभी सुपनों से जाये।
हरि जपें भूले न इक पल, जग के भूले सारे गम।
पार करो मेरी किस्ती, डूबती न मुझमें दम।

हरि जपें लिपटे न जग में, मिल विछुड़े झूठी कसमें।
कैसे हरि तुझे मनाऊँ, ज्ञान मिले गाऊँ नगमें।
हरि हरि जपें हरि हरि जपें, हरि हर समय तू ही दिखे।
बन कर लहर बहते रहें, अन्तस छिपा सागर लखे।

बन सकूँ सेवक तुम्हारा, बल दो जो पहुँचूँ द्वारे।
लाज रखना तुम हमारे, अनजाना पथ हम हारे।
अश्रु से पूजा करूँ मैं, पास में कुछ भी नहीं है।
तुम जगत के नाथ मालिक, क्या कहें सब कुछ तुही है।

53

निशदिन बरसत नयन हमारे, ज्ञान हमें दो पहुँचूँ द्वारे।
जपे हरि ले नाम तुम्हारा, नाचें गाये जीवन संवरें।
सारे जग के तुम रखबाले, तुझे भूल कर दुख को पाते।
जीवन के तुम ताप मिटाते, सुमरे तुमको दुख को हरते।

बहती है नयनों से धारा, पहुँचाये हरि मैं तेा हारा।
जनम जनम का दास तुम्हारा, शरणा हूँ जीवन आधारा।
हरि हरि कहते बीते जीवन, सुनूँ सदा तेरी बन्शी धुन।
प्राण इसी में लय हो जाये, नाथ तुम्ही इस जीवन के धन।

हरि हरि बोलें कभी न भूलें, टूटे दिल की तुम ही आशा।
अन्धकार में दीप जलाओ, तुम समर्थ सब मिटे निराशा।
लाज राखना इस मेले में, ले चल मुझको होले होले।
प्यार सदा हरि अपना देना, तुझे बसा नयनों में जी लें।

54

आंख यह रिमझिम बरसती, प्यार पाने को तरसती।
देख ले आँखे उठाकर, छिप गया क्यों मैं तड़फती।
घूमूँ दुनिया है तेरी, लाज रख मैं नाथ तेरी।
ज्ञान का दीपक जला दो, पा सकूँ मैं राह तेरी।

नयन में सुपने उमड़ते, किसलिये हम हाय जीते?
बेवफा तुम बन गये जब, सांस फिर क्यों हाय लेते।
दीप तेरा मैं जलाऊँ, चाहता मैं तुझे पाऊँ।
न मिले मुझको तू छलिया, गीतों को गा मिट जाऊँ।

पाना क्या खोना क्या है, खेल तेरा चल रहा है।
नाचें कठपुतली बनकर, टूटता मैं ना रहा है।
ले चलो किस्ती हमारी, प्यारी है तेरी छाया।
दास हैं हम नाथ तेरे, मैं शरणा तेरी आया।

55

सागर में कितनी लहर उठें, ना देखें वह है कहाँ छिपे?
अन्तस को भूली छिपा वही, बड़भागी है जो उसे जपें।
हरि जप अन्तस में ध्यान लगा, कितना भागो ना मिलें पिया।
बिलखे रोये ना कहीं मिलें, हरि जप अन्तस में देख पिया।

जप उसे वही तेरा माली, उस बिन लगता जीवन खाली।
हरि जप ले चैन मिले मन को, लगती जीवन में फिर लाली।
हरि जप हरि जप मन शान्ति छिपी, पीड़ा हरि बिन ना कभी मिटी।
सर्जक पालक वह ही तेरा, बड़भागी वह ना नजर हटी।

हरि जप हरि जप रखबाला वह, तूं छोड़ नाव खेवट है वह।
ब्रह्माण्ड उसी का है सारा, संग उसके बह ले प्यारा वह।
हरि जप हरि जप जपता ही जा, ना छोड़ उसे अपना है क्या?
नयनों के सुमन चढ़ा उसको, खिलता मुरझाया यह जिया।

56

बह रही है जिन्दगी यह, लिये है सुपने अनेंको।
बह रहा है नयन पानी, रंग कितने ही अनेकों।
हरि बिना न चैन आये, दन्श जग के हैं रूलायें।
डोलती नौका भंवर में, मन हरी बस याद आये।

जपो हरि जपते रहो मन, बाजती सब ओर हरि धुन।
जो शरण हरि की गया है, बहे सागर में लहर बन।
नाम हरि का एक सांचा, क्यों बना जग में उदासा।
लहर सागर को छिपाये, जानों अन्तस है प्यासा।

जपले हरि जपता ही जा, उसको नहीं करना जुदा।
सांस उसके गीत गायें, छवि को नयन में रख सदा।
स्वप्न सा संसार सारा, कौन जीता कौन हारा।
हरि बसे जिसके हृदय में, न डरे ले जाती धारा।

57

हरि यह विनय है हमें प्यार देना, बालक तुम्हारे दया तुम करना।
चल चल गिरें हम न कोई ठिकाना, जगत में तेरे बिन किसको कहना।
सारे जग के तुम्ही हेा रचैया, पार लगा दो डूबे न नैया।
प्राण पुकारे तुही मेरा साजन, कैसे सजूँ मैं तुम बिन कन्हैया।

जप जप तुम्ही को दिल में बिठाले, बह रहे आंसू चरण में चढ़ा दे।
स्वप्निल जगत यह कुछ पल का मेला, उबल रही पीड़ा तुमको दिखा दे।
प्राण यह प्यासे खोजे तुम्ही को, छिप तू गया क्यों रूला रहा हमको।
बाट निहारूँ मैं रो रही अंखिया, पैयां पडू. नहीं कर दूर हमको।

जीवन के दाता पालक तुम्ही हो, झरते है आंसू सोये हुए हो।
लाज को रखना तेरे दर आया, तुम ही नयन में समाये हुए हो।
जगत में भटकता तुमको तड़फता, नयनों से झर झर प्रभु नीर गिरता।
प्यार हमें दे नचा ले तू कितना, सदा साथ चाहूँ खोये न रस्ता।

58

खोज पी को पी रटो मन, बाजती सब ओर पी धुन।
छोड़ तृष्णा द्वन्द मिटते, देख अन्तस पी छिपा मन।
गीत गा ले मन उसी के, खेल यह जिसने रचाया।
नाचे कठपुतली बन कर, ना किसी ने पार पाया।

पी रटो वह ही सबल है, उस बिना कुछ भी नहीं है।
लहरों का स्वामी दरिया, याद रख दिल में वही है।
पी रटो रटते रहो मन, आस किसकी कर रहा है।
छोड़ो नौका को अपनी, देख पी ले जा रहा है।

कुछ समय का खेल स्वप्निल, पी रटो रटते रहो मन।
नयन से जब नीर बरसे, फिर खिल उठे दिल का सुमन।
पी के शरणा में हो जा, जीवन का वह ही माली।
खिलती मुरझाई बगिया, उसको रट लगती लाली।

59

हरि हरि कहते बीते जीवन, कान सुने बजती अनहद धुन।
विछुड़ा जाता सारा मेला, जप ले उसको वह सांचा धन।
किसकी याद लिये मन रोया, स्वप्निल दुनिया साथ न कोई।
अपना कौन पराया जग में, जप ले मन हिय शीतल होई।

हरि हरि जप ले हरि में डूबो, आता रेला उसे न भूलो।
अपने वश में नहीं यहाँ कुछ, खेला हरि का हरि को जी लो।
नाचे दरिया लहर यहाँ हम, पता नहीं है कहाँ जा रहे।
देखो अन्तस छिपा वहीं है, जप ले उसको साथ वह रहे।

हरि हरि जपो पकड़ लो दामन, बरसेगे नयना बन सावन।
लहरे सभी भागती जाये, क्षण भंगुर यह सारा जीवन।
ज्ञान ध्यान वह सबका मालिक, पथ भूले को देवे रस्ता।
सौंप स्वयं को हरि चरणों में, जपले उसको हर घट बसता।

60

हरि हरि जपो कट जाये सफर, न पता नाव यह जाये किधर।
दरिया में बहो लहर बन कर, अन्तस सागर न कोई डगर।
हरि जप हरि जप मन सदा जपो, मिटते सारे भय हरी जपो।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, नहीं भूलो उसे सदा जपो।

इस जग का वही रचैया है, बिन हरि धीरज कैसे लेवे?
उसकी मर्जी जब तक खेले, हरि बढ़े प्यार ना दिल रोवे।
स्वप्निल दुनिया मर्जी हरि की, दिल को समझा ले या रों लें।
जब नीर गिरे झर झर तेरे, डूबो अन्तस में हरि जप ले।

मर्जी उसकी से आये हम, मर्जी उसकी खुलता ताला।
गा गीत उसी के रखबाला, सुख शान्ति मिले पी ले हाला।
हरि हरि गा प्रियतम प्यारा वह, ना लहर यहाँ बहता दरिया।
सब ज्ञान ध्यान का मालिक वह, मैं छोड़ पकड़ उसकी बैया।

61

गा गीत उसी के देख जगत, कुछ पल का ही तो मेला है।
जब रोम रोम में वह छाये, मिटते सब भय फिर खेला है।
मन जप हरि जप हरि सांच यही, प्यासे प्राणों की प्यास यही।
ले जायेगा तेरी किस्ती, विश्वास करो वह जगत मही।

जपता ही जा मन क्या जग में, मत उलझ जगत की तृष्णा में।
जब चोंच दई चुग्गा देगा, बिन कृपा मिले ना कुछ बस में।
चलता जा जपता जा हरि को, स्वप्निल यह सारी दुनिया है।
तू नीर दिखाये किसे यहाँ, नाचे सब ता ता थैया है।

हरि जप हरि जप देगा प्रकाश, झूठी छूटेंगी सभी आस।
साजन से मिलने लहर चली, देखेगी वह तो सदा पास।
खिल जायेगी तेरी बगिया, मुरझाई बीत गई सदिया।
हरि जप नयनों में उसे बसा, मिल जायेगी उसकी छैया।

62

हरि हरि जपें तुझे ना भूलें, दुख सुख आयें सबको सह ले।
बस जाओ मेरे नयनों में, प्रीति लिये इस जग में बह ले।
जीवन सर्जक मेरे पालक, कैसे नाथ मनाऊँ तुम को।
अन्तर्यामी घट की जानों, कैसे दर्द दिखाऊँ तुमको?

ना रूठो मुझसे करूणाकर, बहता इन नयनों से पानी।
खोज खोज कर मैं तो हारा, प्यासा तुमसे मांगू पानी।
डर लागे मैं दास तुम्हारा, अबल मुझे दो नाथ सहारा।
डगमग मेरी नौका करती, पार करो प्रभु मैं तो हारा।

हरि हरि जपें मनायें तुमको, जाये कहाँ पता ना हमको।
ढलती शाम पुकारे तुमको, देना प्यार न भूलो हमको।
विरह तुम्हारा प्यारा लागे, जग में बहता आंसू खारा।
डुबो प्रीति में रंग ले मोहन, बहे नयन ले जाये धारा।

63

निशदिन बरसत नयन हमारे, इन आंखों के तुम ही प्यारे।
बाट निहारूँ सदा तुम्हारी, ना भूलो तुम मोहन प्यारे।
अगम अगोचर पार न तेरा, खोजे मनुआ तू है मेरा।
तुझ बिन कृपा न दीपक जलता, फैला जग में खूब अंधेरा।

कुछ ना जानूं सुन लो मेरी, हरि हरि जपें मनायें तुमको।
बालक हूँ मैं नाथ तुम्हारा, दे दो अपनी छाया हमको।
प्रेम डगर यह प्यारी लागे, मिट जाये ना बन अभागे।
सदा नयन में मेरे रहना, टूट न जायें तुमसे धागे।

इस जीवन के तुम ही मालिक, डुबो हमें तू अपने रंगा।
प्यार मिले मिट जाती शंका, पावन गंगा मन हो चंगा।
प्यार बढ़ा ले भूल न मुझको, अंखियाँ रोवें इस मेले में।
तुम बिन मुझको कुछ न सुहावे, बस जाओ मेरे नयनों में।

64

किसको सुनायें दर्द हम, सुन ले यहाँ कौन है?
आँखे उठा नभ देखता, ना बोलता मौन है।
आंख बरसी पर न आया, खत्म कर सारी बफा।
ना पता कैसे रिझाये, क्यों हुआ हम से खफा?

झिलमिलाता यह जगत है, रूप कितने बदलता।
छोड़ तृष्णा जप हरी को, वह दुख सारे हरता।
सुखदायक जप ले हरि मन, सन्ताप सारे मिटे।
खेवेगा नौका तेरी, ध्यान ना हरि से हटे।

हरि जपो हरि संग जी लो, साथ में ना भूलना।
बनकर लहर बहो दरिया, दूर ना है जानना।
बहे दरिया रूप हरि का, लहर क्यों नादान है।
हरि जपो मन संग बह लो, डर लगे ना साथ है।

65

नीर मैं किसको दिखाऊँ, छिप गये अज्ञात में।
लाज को रखना हरी तुम, मैं भटकता जगत में।
थक गये दर पर न पहुँचे, क्या बता किस्मत यही।
नाथ तुम हो जगत पालक, थाम लो मेरी बही।

शरण अपनी राख लो तुम, अबल मैं नाथ हारा।
प्यासी दर्शन की अंखियां, खोजता दे सहारा।
द्वार पर पहुँचूँ तुम्हारे, दया का दान देना।
झर रहे है नीर मेरे, ना कभी रूठ जाना।

हरि सदा तुमको मनायें, नयना आंसू आये।
प्रीति ना तोड़ो मुरारी, चाह हम प्यार पाये।
प्राण प्यासे यह तड़फते, नीर रिमझिम बरसते।
आ मिलो कर अब न देरी, नाथ हम पांव पड़ते।

66

हरि जपो कटता सफर है, और रक्खें ना खबर है।
बह रहे निज चाह में सब, खोज अन्तस हरि जिधर है।
आये हम जायेंगे कब, न जानते जाने है रब।
खेल दो दिन जिन्दगी का, जा रहा मिटता यहाँ सब।

बैचेन क्यों दर्द दिल में, कौन सी है प्यास घट में।
नीर यह अंखियां बहाये, सब पलटते रंग पल में।
हरि जप बरसेंगे नयना, पथ मिलता क्या है कहना।
सब जगत का वह मही है, बन लहर सागर में बहना।

हरि जपो जपते रहो मन, सोंच दुख की सब मिटे मन।
नयन में जब हरि समाये, हृदय का खिलता सुमन मन।
अबल हम वह शक्तिदाता, ज्ञान को वह ही जगाता।
ध्यान कर ना भूल उसको, भाग्य का वह ही विधाता।

67

कुछ न पाना कुछ न खोना, संजोते फिर भी सुपना।
बरसे नयनों से आंसू, देखते हम कौन अपना।
जप हरि स्वप्निल है दुनिया, छल रहा है हमें छलिया।
प्रीति बिन आये न चैना, मन पकड़ो हरि की बैंया।

हरि जपो जपते रहो मन, फिर मिट सकेगी सब चुभन।
जो बुझा है दिल तुम्हारा, खिल जायेगा हृदय सुमन।
चित्त की चिन्ता मिटाता, व्यर्थ क्यों जी को जलाता।
छटेगा सारा अन्धेरा, क्यों न हरि के गीत गाता।

हरि जपो जपते रहो मन, जान ले सांचा यही धन।
दुखों के बादल उमड़ते, काटता वह बन सुदर्शन।
सांस थोड़ी राह टेढ़ी, मृगतृष्णा में न जाये।
मन करो सुमरण हरी का, ज्ञान का दीपक जलाये।

68

कुछ किया ना ज्ञान था ना, तू बता कैसे मनाये?
बहते नयनों से आंसू, चाहते हम प्यार पायें।
हरि जपे तुम ही सुनोगे, साथ ना कोई हमारा।
बसते हर घट के भीतर, क्यों बता मैं नाथ हारा?

अबल हम जग के रचैया, चाहें हम तेरी छैयां।
तपे धरा पथ में कांटे, पार करो मेरी नैया।
लाज रखना भटकते हैं, शरण में ले लो मुरारी।
ज्ञान ना अज्ञान में मैं, जला दो दीपक मुरारी।

हरि जपे जपते रहे हम, दो हमको इतना सम्बल।
कठपुतली हम तुम्हारी, नाथ मुझ में कुछ नहीं बल।
मर्जी तेरी आये हम, जायेंगे कुछ न चलेगी।
कौन मैं कुछ पल यहाँ पर, खाक यह उड़ती रहेगी।

69

जागो मोहन अब तो प्यारे, निशदिन बरसत नयन हमारे।
इस दुनिया के तुम रखबाले, भूल गये क्यों हम तेा हारे।
पाप पुण्य सुख दुख की छाया, मुझे डरावे तेरी माया।
बढ़कर मेरा हाथ थाम लेा, देखो रोती मेरी काया।

तुम बिन कुछ भी नहीं सुहावे, घबराता मेरा यह जीया।
प्यार बढ़े नित करो कृपा प्रभु, बरसें मेरी देखो अंखियां।
इस मेले में भटक रहा हूँ, जनम जनम का मैं हूँ प्यासा।
अपनी दया बनाये रखना, हरि मैं लिये तुम्हारी आसा।

हरि हरि जपें तुझे ही पूजें, ज्ञान नहीं कुछ जग में भटकें।
अज्ञानी हूँ दास तुम्हारा, नीर नयन से मेरे टपकें।
हरि बिन कोई और न दूजा, सदा साथ में फिर क्यों भूला।
नाच नचाये जग में तृष्णा, तुझे पुकारे तेरी लीला।

हरि हरि जपें मनावें तुमको, जाता जीवन रटते तुमको।
खेल यहाँ पर दो दिन का है, आना तेरे घर फिर सबको।
आदि सत्य तू अन्त सत्य है, वर्तमान में तेरी चलती।
देता ज्ञान सभी का चालक, मैं की होली हरपल जलती।

70

ले चल नौका मेरे खेवट, गिरते नीर नयन से मेरे।
अगम अगोचर पार न तेरा, फिर भी प्राण तुझी को टेरे।
स्वप्निल दुनिया रंग अनेको, ना लगता जिय कुछ तो बोलो।
कैसे तुमको नाथ मनायें, देखो हमको कुछ तो तोलो।

हरि हरि जपें मनायें तुमको, दुख जग में सुख मानूं तुममें।
दीन दयालू करो कृपा अब, अबल प्रभु मैं बल नहीं मुझमें।
लाज राखना इस मेले में, शरण नाथ मैं तेरी आया।
अज्ञानी हूँ कुछ ना जानूँ, फिर भी चाहूँ तेरी छाया।

तपती धरती तुझे पुकारें, ज्ञान हमें दो हम तेा हारे।
तुझ बिन कृपा जले ना दीपक, चाह प्यार की मोहन प्यारे।
झर झर झरती मेरी अंखियां, इस जीवन के तुम ही रसिया।
मेरे नयनों में बस जाओ, तृष्णा मिटती पाऊँ सैंया।

71

मन गीत सुना यह कटे सफर, छलिया ना जाने छिपा किधर।
उस बिन रोये मेरी अंखियाँ, नयनों से नीर गिरे झरझर।
दिल में है दर्द नयन पानी, मैं हुई प्यार में दीवानी।
कटती रो रो कर रतियां है, घूमूं जग में बन अनजानी।

वह हमें नचावें हम नाचें, बन्शी की धुन प्यारी लागे।
नजरें हम से वह फेर न ले, जिय भर भर आवे डर लागे।
मदिरा उसकी गीतों में हो, दुनिया की रंजिश कुछ ना हो।
बहता जाऊँ मैं लहर बना, सागर मेरे नयनों में हो।

तपती धरती तू प्यास बुझा, मन कोई ऐसा गीत सुना।
तन मन झूमें बरसे पानी, कोयल कूके हरि गीत सुना।
हरि रोम रोम में बस जाये, मन और किधर तू ना जाये।
छवि उसकी ही प्यारी लागे, मैं विनय करूँ ना भटकाये।

72

आँख में आंसू हमारे, अज्ञान ना त्यागते।
जानते कुछ भी नहीं हैं, कह रहे सब जानते।
जन्म लेते हैं धरा पर, अनगिनत सुपने लिये।
टूटते जब बिखरते हैं, पल लगे ना रो दिये।

घूमते अनजान गलियां, ना पता साथ छलिया।
नाचते हम वह नचाता, नचाता लहर दरिया।
ज्ञान बुद्धि बल है उसका, सोचता सब वही है।
मैं हटा ले स्वप्न दुनिया, जाता लिये वही है।

शान्ति का भण्डार है वह, तप्त मन की छांव वह।
दुखों की आंधी उड़ाता, प्राण की है प्यास वह।
कर समर्पण हरि चरण में, चल रहा खेल उसका।
सदा करो सुमरण हरी का, दीप जले फिर हिय का।

73

कुछ गीत कहो तो गा दूँ, अपनी मैं व्यथा सुना दूँ।
इस मेले में विछुड़े तुम, दिल लगता नहीं बता दूँ।
आंसू गिरते है टप टप, मेरे जीवन के सर्जक।
तुम बिन जियरा ना लागे, पथ दो पहुँचू मैं तुम तक।

चाहूँ बन्शी धुन सुनना, तेरी यादों में खोना।
मैं अबल नाथ अज्ञानी, बिन कृपा न कुछ भी होना।
तुम करूणा के सागर हो, देखो बरसें है अंखियां।
हरि लाज राखना मेरी, जीवन के तुम ही रसिया।

हरि हरि तुमको ही पूजे, दिन रात मनायें तुमको।
जो नीर बहे नयनों से, वह बहे न भूले तुमको।
हरि हरि जग से मैं हारा, न दीखे कोई किनारा।
तू पार लगा दे नौका, दीखे बस तू ही सहारा।

74

प्रभु दर्शन को तरसे नयना, झर झर झरते मेरे नयना।
अपना प्यार मुझे दे दे तू, चाहूँ हरपल तुझ में बहना।
दास तुम्हारा हूँ मैं प्रभु जी, अपनी आंखो को तुम खोलो।
तोड़ो ना तुम मुझसे नाता, कुछ कहूँ सुनो कुछ तो बोलो।

ना प्यास मिट सकी जन्मों की, चाहत हरि तुमसे मिलने की।
तुझे दिखाऊँ अपना दिल मैं, शरणा तेरी सुन ले मन की।
तुम बिन कुछ अच्छा ना लगता, अंखियां देखें तेरा रस्ता।
मेरे जीवन के तुम माली, सब तेरी चाहत से खिलता।

प्रियतम बनो ना तुम बेदर्दी, नयना झर झर झरते जावें।
चाहत दिल की थके कभी ना, बहते जावे तुमको पावे।
मेरे नयनों में रहो सदा, तेरी दुनिया तुम मात पिता।
अज्ञानी हूँ बालक तेरा, तुम माफ करो यदि हुई खता।

75

प्रियतम प्यारा वह मन भावन, अंखियां बरसें जैसे सावन।
सकल सिद्धि फीकी पड़ जाती, झरे नयन बाजे जब हरि धुन।
स्वप्निल दुनिया छिपा छलिया, पड़ चरणों में जप ले सैया।
उस बिन चैन न दिल को आवे, पार लगावे वह ही नैया।

सारा है ब्रह्माण्ड उसी का, जप ले उसको वह ही मन का।
मैं की सदा जली है होली, प्रियतम पावे हो जिय हल्का।
हरि हरि जपो नाम है सांचा, मन को काहे करे उदासा।
आनी जानी इस दुनिया को, जपता जा हरि देख तमाशा।

जीवन है यह एक कहानी, ऋषि मुनि हारे कोई न जानी।
सहज बनो बन लहर यहाँ तू, संग तेरे सागर तूफानी।
नयना भीगे हरि से कहना, तेरी मर्जी से ही जीना।
इतनी शक्ति हमें तुम देना, नयन रखूँ ना कभी विछुड़ना।

76

मेरे जीवन अन्तर्यामी, नदी करा दे पार।
अंखियां रोयें तुम बिन मोहन, तुम मेरे भर्तार।
ऋषि मुनि ज्ञानी करते पूजा, देता उनको ज्ञान।
अंखियां मेरी झर झर बरसे, मुझे करा दे भान।

मन्बुद्धि हूँ अज्ञानी हूँ, चाहूँ फिर भी प्यार।
मेरे देवता तुम ना रूठो, सुन लो मेरी पुकार।
बालक तेरा लाज राखना, बीते न यह बहार।
दशों दिशायें करती पूजा, तू जीवन आधार।

छाया है सब ओर अंधेरा, तेरी रखता आस।
नहीं भूलना इस मेले में, प्राणों की तू प्यास।
शीश झुकाये खड़े द्वार पर, जीवन के श्रृंगार।
मेरे नयना टप टप टपकें, और न कुछ उपहार।

77

शाम जाती रात आती, न ठिकाना अब कोई हैं।
विमुख मुझसे हो गये जो, चाह क्या ले जी रहे है।
टूटते जाते यहाँ पर, मिलकर सारे ही रिस्ते।
आंख में आते है आंसू, जा रहे अब कुछ न कहते।

मन हुआ बैचेन इतना, जानूँ कैसे यह है सुपना।
ना मना पाये तुझे हम, दिल न माने बहे झरना।
खिल यहाँ हर फूल झड़ता, ले यहाँ अरमान मिटता।
चलती सदियों से गाथा, नयन से नीर बहता।

मिट गई कितनी कहानी, नयन यह रिमझिम बरसते।
तपती धरती मेघ घिरते, जप हरि खुशियां वह लाते।
हरि जपो मन द्वन्द मिटते, सूखी बगिया पुष्प खिलते।
सारे जग का वह ही स्वामी, धन्य जो हरि चरण पड़ते।

78

किसको कहे अपना यहाँ, मैं खोजता तुम हो कहाँ?
देकर प्रभु इतनी पीड़ा, तुम छिप गये जायें कहाँ?
नीर नयनों से बरसते, नाथ हम तुमको तड़फते।
मर्जी प्रभु तेरी चलती, प्यार पाने को तरसते।

चलते सुमरण तेरा है, इस हृदय में तू बसा है।
विनती करता ना भूलो, मेरी न कोई खता है।
जमी ऊसर फूल खिलते, तेरी कृपा हो जब यहाँ।
मैं मनाऊँ तुझे कैसे, मैं हूँ अबल पाऊँ कहाँ?

हरि जपें तुझे ही खोजें, सब मिटे सुपने हमारे।
बहते नयनों से आंसू, बन सकोगे क्या हमारे।
चल रहे जब भी गिरे हम, थामना विनती यही है।
दास को तुम प्यार देना, नयन से बहती झड़ी है।

79

मेरे नयना हरि तुम देखों, क्या कहते है कुछ तो समझो।
कितना तुमने दर्द बिखेरा, अंखियां रोये दिल को समझो।
अपना प्यार हरी तुम दे दो, मेरी भटकन को तुम हर लो।
अच्छा लगता तुम बिन कुछ ना, बरसे नयना अब तो लख लो।

नाचू तेरी बन्शी धुन सुन, जगत प्रीति झूठी तू सांची।
निज प्रेम में रंग ले मोहन, नाचूं जैसे मीरा नाची।
बीता जाता है यह सुपना, तुम बिन कहूँ किसे मैं अपना।
पल पल तेरी याद सताये, बहते जाये मेरे नयना।

जनम जनम का साथ तुम्हारा, तुमको भूला हूँ मैं हारा।
अब तो दीप जला दे रसिया, जग हेा जाये रसमय सारा।
सदा नयन में मेरे रहना, नहीं प्रीति का टूटे झरना।
सांसे तेरे ही गुन गायें, मुझसे तुम ना कभी विछुड़ना।

80

मन गीत सुना जियरा रोये, हरि बिन बतला कैसे जीये?
इस रंग बदलती दुनिया में, बतला कितना आंसू पीयें?
मन हरि हरि कह यह कटे सफर, चाहूँ देखे हरि कभी इधर।
सारे जग का वह रखबाला, नयनों से नीर गिरे झर झर।

तपती धरती हरि ही बरसे, आहट पाने छतियां धड़के।
बगिया मुरझाती बिन प्रियतम, नयनों से आंसू हैं टपके।
कुछ ज्ञान नहीं अज्ञानी हम, पर प्यार हरी ने है खीचा।
मन उसे पुकारूँ मैं रो कर, इन नयनों ने उसको सींचा।

हरि विनय प्यार अपना देना, मेरे नयनों में तुम रहना।
पल भर भी दूर नहीं करना, अपनी छांया में प्रभु रखना।
आंसू का मोल नही जग में, पर इनसे मैं करता पूजा।
कुछ और नहीं जो तुमको दूँ, हरि लाज राख ना है दूजा।

81

वंशी बजैया रास रचैया, चाह रहा तेरी मैं छैंया।
तुम बिन मेरा जिया न लागे, आ जाओ अब प्यारे रसिया।
बाट निहारूँ जनम जनम से, नीर गिरायें मेरी अंखियाँ।
बेदर्दी तुम बनो न प्रियतम, पड़ू. तुम्हारे हरि मैं पैंया।

प्यार बढ़ा ले रास रचा ले, बीतेगी फिर हँस हँस रतियां।
निर्मोही बन कर क्या लोगे, नीर बहा ना प्यारे छलिया।
जीवन तेरा कठपुतली हम, जैसा चाहे राखे ना दम।
सकल सृष्टि तेरे गुन गाती, पार करो नैया आंखे नम।

तुमकों पूजूँ गीत सुनाऊँ, बहे नीर दिल तुझे दिखाऊँ।
बोलो खता हमारी है क्या, तड़फ तड़फ कर रैन बिताऊँ।
थक थक देखें नयन हमारे, कब आओगे मेरे द्वारे।
सांस सांस में तुम्ही बसे हो, आओ मेरे प्राण पुकारे।

82

माँगू क्या मर्जी तेरी, प्रभु खेल तूने क्या रचा?
दर्द हमको दे दिया है, क्या मिल रहा हमको नचा?
बहते नयनों से आंसू, तुमको पुकारे रात दिन।
छोड़ हमको छिप गये तुम, यह ना सही जाती चुभन।

न बनो निर्मोही इतने, देख लो हम तो भटकते।
नीर आंखों से बरसते, प्राण यह तुमको तरसते।
ज्ञान को ना पा सका मैं, जलती सुपनों की होली।
अबल हूँ बस में नहीं कुछ, शरण आया आंख रो ली।

तुम जगत के हो रचियता, नाथ मैं बालक तुम्हारा।
चल गिरूँ बस थाम लेना, जानना न मैं था हारा।
देखते तुझ ओर हम है, चाहते टूटे न नाता।
दीप तम में तुम जलाना, भाग्य के तुम ही विधाता।

83

मर्जी हरी की नाचते, ना जानते कल हों कहाँ?
बन जाये न कैसा समा, कुछ पल लिये आये यहाँ।
हरि छोड़ कर जाये कहाँ, ना चैन उस बिन है यहाँ।
मन जप उसे वह सत्य है, ना ठौर उस बिन है यहाँ।

तू लहर है सागर वहीं, अन्तस समझ ले है वही।
यहाँ लहर के बस में क्या, मिट जाये सागर तू ही।
सब ज्ञान की बाते करें, कुछ चोट से अंखियां झरे।
कैसे मनाऊँ हरि तुम्हें, जग में लिये भटकन फिरें।

सम्बल तुम्हारा अबल हम, चलते चलाता जानते।
अंखियाँ रोती यह मेरी, प्यार दे यह चाहते।
पाऊँ तुझे खो प्यार में, ना मैं रहूँ फिर है तू ही।
बस जाओ इन नयनों में, मिट पायेगे सत्य यही।

84

दिन बीते ना आये बालम, अंखियां मेरी नीर बहाये।
जलूँ विरह पूछे ना कोई, ढाढस मुझको कौन बंधाये?
सुन लो मेरी रोवें अंखियाँ, मेरे जीवन के तुम रसिया।
तुम बिन मुझको कुछ न सुहावे, आन मिलो तुम प्यारे सैंया।

नयनों मे मूरति तेरी है, दीखे ना सूरत तेरी है।
क्या लोगे छलकर तुम मुझसे, दासी तो प्रभु यह तेरी है।
नाम की मैं पी रही मदिरा, डर लागे ना आये पीया।
क्या जीवन में रोते रोते, बीतेगी क्या ऐसे घड़ियां।

चलते यहाँ इशारे तेरे, नहीं परीक्षा ले हम हारे।
मन्द बुद्धि अज्ञानी हूँ मैं, चरण पड़ू. प्रभु तू ही तारे।
लाज राखना तू ही मालिक, खो ना जाऊँ इस मेले में।
प्यासी प्यारे तेरे प्यार की, प्यास मिटा खो जाऊँ तुझमें।

85

गीत सुना मन हरि ही भाये, अंखियां मेरी नीर बहायें।
हरि की यादें प्यारी लागे, चाहे जिय इसमें खो जाये।
छिपा हुआ वह छलिया देखे, अंखियां मेरी रिमझिम बरसे।
हरि प्यारा मन भीग इसी में, व्याकुल प्राण इसी को तरसे।

कुछ पल खेल जिन्दगी सुपना, किसे कहें हम जग में अपना।
व्यक्त करे सब अपनी पीड़ा, मिले बिछुड़ते बहते नयना।
गा मन हरि हरि चैन मिलेगा, तार उसी से तभी जुड़ेगा।
बनो लहर नाचे यह सागर, छोड़ उसी पर लिये चलेगा।

उसकी मर्जी खेल खिलावे, चाहे जब भी वह ले जावे।
करूणा कर वह याद करो मन, इन आखों से आंसू आवे।
हरि हरि धुन में लीन होय मन, बहता जाये यहाँ लहर बन।
ना कुछ अपना सब कुछ उसका, नीर बह रहे हरि गा ले मन।

86

हरि हरि जप मन प्रीति बढ़ाले, सो मत दिल का सुमन खिला ले।
खिल जाये मुरझाई बगिया, हरि को जप ले नयन बसा ले।
कुछ पल के सब याराने हैं, बीते जाते अफसाने हैं।
मृग मरीचिका में फँस कर मन, कातर बन ना दिल रोवे है।

तेरे हाथ यहाँ क्या जग में, बहते कितने आंसू देखो।
मिटते दुख हरि प्यार बढ़ाले, दिल में उपजे जप सुख देखों।
जिय रोये जप ले मन हरि को, ना समझे पागल मन देखो।
कितना ही चीखें चिल्लाये, जगत हंसे मतलब क्या देखो।

हरि बसते जब रोम रोम में, मन का दीपक तब जल जाता।
उसकी मर्जी से है आना, जायेंगे कुछ जोर न चलता।
आदि सत्य है अन्त सत्य वह, वर्तमान क्यों उसको भूला।
जपता जो मन देख उसी को, जान यहाँ सब उसकी लीला।

87

ले चल नाविक नदिया गहरी, छोड़ न मुझको इस मझधारे।
बन्शी की धुन सुना सुना कर, ले चल मुझको धीरे धीरे।
तुम बिन पार न होगी नदिया, पार करा दे मुझे खिवैया।
बरस रही हैं आंखे मेरी, मुझसे अब छल कर ना छलिया।

दास तुम्हारा जन्म जन्म का, अपना प्यार सदा ही देना।
तुम बिन रोये मेरी अंखियां, नहीं किनारा मुझसे करना।
हरि हरि बोले हरि हरि गायें, तुमसे हरपल प्रीति बढ़ाये।
मेरे जीवन के तुम खेवट, याद करूँ और आंसू आये।

जग की प्रीति यहाँ सब झूठी, पल पल रंग बदलती दुनिया।
बस जाओ मेरे नयनों में, सफर सुहाना हो कन्हैया।
गीत सदा तेरे ही गाये, आंसू से करता मैं पूजा।
तुम बिन नहीं मिटेगी भटकन, आओ हरि न और है दूजा।

88

जग सुपना मन लेता सुपना, जीत हार क्या जब सब सुपना।
चैन न आये मन दुख पाये, समझ सकें ना क्यों सब सुपना।
बन बन मिटती यहाँ लकीरें, जान सके ना खोया कित रब।
आंसू की बहती गंगा है, समझ सके ना सुपना है सच।

कौन देखता मन जब सोवे, जागें सोंचे यादें रखता।
पागल बन कर घूम रहा है, क्यों सुपना सा सब ना लगता।
हरि भूला हरि को ना जपता, पागल मैं को क्यों ना तजता।
चालक सारे जग का हरि ही, पकड़ यहाँ मैं को क्यों फंसता।

जप हरि हरि विश्वास करो मन, सब सुपना है व्यर्थ ना डरो।
हरि की मर्जी वह संग तेरे, वही नचावे खेल तुम करो।
हरि हरि जप मिटती सब चिन्ता, अन्तस वही छिपा है छलिया।
जब छूटे सब जग की तृष्णा, ध्यान लगा जप देख ले पिया।

89

हरि हरि बोलो हरि को जी लो, बहते आंसू उनको पी लो।
खेल यहाँ सब उसका चलता, जैसे राखे वैसे रह लो।
हरि मर्जी से आना जाना, कर मर्जी स्वीकार यहाँ पर।
धूप छांव का खेल यहाँ पर, तप कर मर्जी मान यहाँ पर।

अंखियां नीर बहाये जप ले, कुछ न हाथ में टूटे सुपने।
दे पतवार हरी के हाथों, भाग्य विधाता वह ही अपने।
जियरा रोये मिले न बालम, बीता जाता सारा सावन।
कैसे अपना दिल समझाऊँ, आन मिलो घबराये यह मन।

हरि हरि जप मन वह सुखनन्दन, सारी दुनिया है यह स्वप्निल।
जग की तृष्णा में क्येां उलझे, आज यहाँ थे गये कहाँ कल।
हरि हरि जपो उसे ही खोजो, जाती संध्या कभी न भूलो।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान में उसको जी लो।

90

ढूढते खो जायेंगे हम, ना मिलो मर्जी तेरी।
जिन्दगी के तुम ही मालिक, कहती क्या मैं चल गिरी।
बहती है आंसू की गंगा, नाथ हमें देख लेना।
क्या हमारा भाग्य ऐसा, तरसें आये न चैना।

कितने जन्मों से भटकता, प्राण तुझे ही पुकारें।
मुझसे रूठा मेरा बालम, कैसे यह दिन गुजारे।
दास तेरे हरी कृपा कर, नाचते कठपुतली हम।
बह रही नयनों से गंगा, अब हरो प्रभु सारे गम।

नयन से झरती जो पीड़ा, अपनी बन्शी बजा दे।
खिल उठे मुरझाई बगिया, अब हरि रिमझिम बरस दे।
हरि को जपते रहेंगे, खोजते हरी रहेंगे।
बहेगी नयनों से गंगा, बहते उसमें रहेगे।

91

हरि हरि जप मन प्यार बढ़ा ले, विरह अग्नि को खूब बढ़ाले।
वैभव सारे फीके पड़ते, अंखियाँ रोवें कमल खिला ले।
जग के दन्श सतावें सह ले, स्वप्निल दुनिया तप यह कर ले।
उसकी मर्जी आना जाना, सुरति उसी की मन तू कर ले।

दो दिन का यह रैन बसेरा, ना समझे मन रोवें अंखिया।
प्रीति बढ़ा ले हरि सुखनन्दन, दुख की टूटे सारी कड़ियां।
जपता जा हो उसे समर्पित, तेरा क्या सोंचो मन पागल।
नयन बसा ले उसकी मूरति, जहाँ ले चले देगा सम्बल।

जग की अनजानी पगडण्डी, जप हरि को वह इसे संवारे।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान सब उसी सहारे।
लहर यहाँ सागर हरि नाचे, बहे लहर हम तू क्या सोंचे।
झिलमिल करती उठे तरंगे, छिपा सभी में हरि ही नाचे।

92

नयनों से जो झरती पीड़ा, मन ऐसा तू गीत सुना दे।
खिल जाये मुरझाई बगिया, जल रिमझिम रिमझिम बरसा दें।
मेरा बालम रूठ गया जो, तान सुना दे उसे मना दे।
उस बिन चैन न आये मुझको, रोम रोम में प्यार जगा दे।

कठपुतली माना हम उसकी, फिर भी बहते नयन हमारे।
दिल पसीज जाये उसका मन, गीत सुना दे हम तो हारे।
जनम जनम से उससे नाता, वह ही मेरा भाग्य विधाता।
बना हुआ क्यों फिर हरजाई, समझ नहीं यह मेरे आता।

जग की अनजानी पगडण्डी, किसको बोलें किसे पुकारे?
मेरे प्राण पुकारे तुमको, सुन लो अब तो हम है हारे।
दूर होंय दुख बरसे नयना, सुना मुझे धुन ऐसी प्यारी।
छा जाये हरि इन नयनों में, छूटे सब मेरी लाचारी।

93

दिन बीते हरि तुम ना आये, धीरज मन को कौन बंधाये।
नीर बहावे मेरी अंखियां, काली रातें मुझे डराये।
अगम अगोचर पार न तेरा, दुनिया सारी रैन बसेरा।
बहते आंखों में आँसू हैं, पीड़ हरो प्रभु जग है तेरा।

दीनबन्धु करूणा के सागर, अंखियां मेरी झरती झर झर।
अपना प्यार मुझे तू दे दे, सुना मुझे बन्शी बन्शीधर।
जाती संध्या तुझे पुकारूँ, कैसे तुमको नाथ मनाऊँ।
नाथ अबल मैं अज्ञानी हूं, इन अंखियों से नीर बहाऊँ।

जपूं तुझे दिल पल पल रोवे, बता तुझे हम कैसे खोजे?
डगमग करती जीवन नौका, पार लगा दे तुमको पूजें।
बाट निहारें अंखिया मेरी, निर्मोही ना बन अब छलिया।
दास तुम्हारा जनम जनम का, चरणों को धोवें यह अंखियां।

94

क्या करूँ मैं ध्यान तेरा, सब जगह तेरा बसेरा।
नयनों से बहते आंसू, सुन मन की मैं हूँ तेरा।
तू जगत का ईश मालिक, कृपा करो तेरे बालक।
चाहे हम प्यार तेरा, ज्ञान मिले पहुँचे तुम तक।

हरि जपें तुझे ही पूजें, नाव मेरी के खिवैया।
देख लो आंखे उठाकर, डूब जाये यह न नैया।
प्यार में खो गई मीरा, बन सका क्यों नहीं पतंगा।
प्रेम में रंग ले मुझे तू, दास तेरा मन हो चंगा।

हरि मुझे तुम माफ करना, घूमता अनजान गलियां।
नयन में आंसू हमारे, पायें कब जाने सैंया।
हरि सदा जपते रहे हम, बहती नयनों से धारा।
दिल से मेरे ना जाना, शरणा तेरी मैं हारा।

95

चाहते थे प्यार को हम, छिपा तू क्यों छोड़ कान्हा?
नीर आंखों से बरसते, न गुनाह जो प्यार चीन्हा।
तेरे बालक कन्हैया, नाव मेरी के खिवैया।
छोड़ ना मझधार मुझको, तुम लगा दो पार नैया।

मृगतृष्णा में फंसे यहाँ, भागते चहुँ ओर डोलें।
ना पता मंजिल कहाँ हैं, जलते हैं दिल में शोले।
स्वप्न सा संसार सारा, दिल नहीं लगता हमारा।
कूल ना आता पकड़ में, बहती नयनों से धारा।

डगर यह अनजान मेरी, चल गिरता होती केरी।
ज्ञान का दीपक जला दो, तम घना मैं नाथ टेरी।
नयन में आंसू हमारे, चल गिरे पहुँचे न द्वारे।
लाज को रखना हरी तुम, इस जग में तू ही तारे।

96

बहलाऊँ इस दिल को कैसे, ज्ञान कहाँ से लाऊँ?
नीर बहावें मेरी अंखियां, दिल का दर्द सुनाऊँ।
प्रियतम खोज रही यह अंखियां, डूब प्यार में जाऊँ।
स्वारथ की दुनिया सारी है, किसको नीर दिखाऊँ?

हरि हरि जपता तू अब सुन ले, प्यार तुम्हारा पाऊँ।
मुझसे ना रूठो तुम मोहन, तुमको नाथ मनाऊँ।
पाप पुण्य कर्मो की रेखा, पार न मैं कर पाऊँ।
शीश झुकाये खड़ा द्वार पर, कृपा होय तर जाऊँ।

ले चल मुझको होले होले, मेले में घबराऊँ।
काली रात डरावें मुझकों, मैं रो तुझे बुलाऊँ।
नयनों में मेरे बस जाओ, डर को दूर भगाऊँ।
अज्ञानी हम नाथ अबल है, चाह प्यार को पाऊँ।

97

तेरे दर पर आये हम, मुझे तुम प्यार को देना।
नयन से नीर बहते है, क्षमा तुम मुझे कर देना।
विधि नहीं जानता मैं कुछ, ना रूठो तम गहरा है।
अबल अज्ञान में हूँ मैं, सहारा एक तेरा है।

बनो निर्मोही न इतने, नहीं लगता हमारा दिल।
बहती नयनों से धारा, तड़फता ईश मेरा दिल।
नहीं अब तुम छिपो छलिया, तुझे मैं खोजती हरपल।
मनाऊँ नाथ मैं कैसे, कहीं संध्या न जाये ढल।

तुम्ही किस्ती के खेवट, दे दे हमको तू मौका।
नयन में नीर मेरे हैं, लगाना पार यह नौका।
यही विनती करूँ छलिया, उठा देखो नजर को तुम।
खाली झोली ना जाऊँ, तुम्हारा प्यार पायें हम।

98

हरि हरि जपो मिलेगा चैना, जप ले तपती धरा यहाँ है।
बहते रहे जगत में नयना, जपो अश्रु से सुमन खिलें है।
किससे करनी यहाँ शिकायत, निभा यहाँ हँस या तू रोकर।
जीते सब अपनी चाहत ले, देख रहा सब नभ चुप होकर।

हरि से प्रीति बढ़ा पागल मन, लगा ध्यान अन्तस सुखनन्दन।
ले जाती है धारा तुमको, डर न लगे घबराये ना मन।
करूणा सागर नाम उसी का, देगा भर वह तेरी गागर।
कर विश्वास हरी को जप ले, ध्यान लगा सुन ले बन्शी स्वर।

कठपुतली हरि की हरि भूले, दुनिया देख इसी मे खोये।
डोर हाथ में उसके नाचे, सुरति रहे डर नहीं सताये।
जप हरि हरि मन, तू जपता जा, प्यार बढ़ाकर तू चलता जा।
स्वप्निल है यह सारी दुनिया, नेह लिये निर्भय चलता जा।

99

क्या करे शिकवा किसी से, रूठ तुम मुझसे गये जब।
नीर नयनों से निकलते, तुम सुनोगे जाने न कब?
चल रहे ले नाम तेरा, जानूं सागर यह गहरा।
नाव मेरी डगमगाती, आस तेरी दे सहारा।

इस जगत के तुम रचैया, नाथ मैं बालक तुम्हारा।
घूमता अनजान गलियां, बहती नयनों से धारा।
इस जग में तुम जो रूठे, न सुनेगा कोई मेरी।
निज चरण में जगह दे दो, जन्मों जन्मों से चेरी।

लाज को रखना हरी तुम, जाती ले मुझको धारा।
चैन आये मुझे प्रियतम, प्यार दे मैं नाथ हारा।
सदा हो सुमरण तुम्हारा, नयन से हरि तुम न जाना।
जाम तेरा पी मगन हो, भूल जाऊँ सब जमाना।

100

दर्शन की यह प्यासी अंखियां, खोज नहीं मैं तुमको पाऊँ।
कण कण में तुम बसे हुए हो, कैसे अपनी प्यास बुझाऊँ।
पाप पुण्य सुख दुख को देखूँ, बहते आंसू कैसे रोकूँ?
अज्ञानी हूँ दास तुम्हारा, दीप जला अंधियारा रोकूँ।

मेरा क्या सब कुछ है तेरा, खेल यहाँ चलता सब तेरा।
कठपुतली बन नाच रहे हैं, ना जाने कब होय सुबेरा।
स्वप्निल जब यह सारी दुनिया, जला रहा दिल क्यों फिर छलिया।
प्यार तुम्हारे खो जाऊँ मैं, इतना तो कर दे तू रसिया।

अपना प्यार सदा तुम देना, अपनी छैयां में प्रभु रखना।
मेरे सर्जक तुम हेा पालक, बहते मेरे देखो नयना।
जलूँ विरह में जलता जाऊँ, जब तक हरि तुमको ना पाऊँ।
बहती रहे नयन से गंगा, अन्तहीन पथ तुझे मनाऊँ।

101

हरि हर तुझे पुकारूँ सुन ले, अपना प्यार मुझे तू देना।
तुम बिन रोयें मेरी अंखियां, मुझको पड़े नहीं है चैना।
तेरी माया यहाँ नचाती, पल पल अंखियां नीर गिराती।
मैं अज्ञानी कुछ ना जानूँ, कैसे भेजूँ तुमको पाती।

सुख दुख के तू खेल खिलावे, चाहत जगा जगा भटकावे।
बनो न निर्मोही तुम इतने, छिपे कहाँ हो तू ना पावे।
गिरे नीर हरि मेरे झर झर, खोज रहे हैं गया तू किधर।
अपरंपार तुम्हारी माया, सुना मुझे दो बन्शी के स्वर।

जीवन माना है इक सुपना, यहाँ दन्श पर जग के लगते।
पियूं नाम की मदिरा तेरी, यही सहारा दुख को हरते।
कृपा मिले खिल जाये बगिया, इन नयनों में आंसू आये।
लाज राखना इस मेले में, देना शक्ति तुझे हम पाये।

102

जो भी है सहना ही होगा, हँस या रो तप करना होगा।
स्वप्निल दुनिया रंग बदलती, देख देख सब जीना होगा।
बहती जाती जीवन नदिया, अन्तहीन न कोई किनारा।
छोड़ा जिसने हरि हाथों में, लिये जा रही हरि की धारा।

कितने देख यहाँ पर सुपने, टूटें बिखरें रो मत पगले।
हरि हरि जप धारा में बह ले, मन के खेल हरि में जी ले।
आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान भी उसका खेला।
नीर बहें हरि चरण चढ़ा दे, याद उसे कर प्यारा छैला।

हरि हरि जप हरि सबका मालिक, नैया पार करे बन नाविक।
उसकी मर्जी यहाँ नचावे, बन जा मन तू उसका सेवक।
हरि हरि जप वह ज्ञान जगावे, विनय करो ना वह उलझावे।
उसे बसा लो इन नयनों में, छूटे चिन्ता हरि ही भावे।

103

आवाज तुझे मैं दूँ, तुम माफ करो अवगुन।
तेरी सब यह माया, मैं कौन यहाँ ले सुन।
तुम बिन जिय ना लगता, दुख दर्द यहाँ डसता।
दुख भंजक नाम तेरा, दुख हर लो दुखहर्ता।

चरणों में पड़ते हम, सुख का दाता तूही।
हरि लाज रखो मेरी, मेरा साहिल तू ही।
पी लूँ तेरी मदिरा, गम निशा ना हो कही।
हरि प्यार मिले तेरा, ले चल फिर मुझे कहीं।

पायें कैसे तुमको, चाहें तेरा सम्बल।
हरि देख हमें तुम लो, नयनों से गिरता जल।
हरि नीर गिरें मेरे, यादें तेरी आती।
करूणा के सागर तुम, दो जला ज्ञान बाती।

104

हरि हरि गायें तुझे मनायें, बीतेगी यह काली रैना।
लिये वासना जग में हारा, टूटे सुपने आया रोना।
एक सहारा तेरा केवल, नैया मेरी पार लगा दे।
बहते इन आंखो से आंसू, प्यारी बन्शी मुझे सुना दे।

मन्दिर अपने मुझे जगह दो, करूँ सदा मैं तेरी पूजा।
कुछ ना तुम बिन अच्छा लगता, नहीं और कोई भी दूजा।
थक कर गिरे थामना हमको, करूणा सागर, तुम कहलाते।
छाया है सब ओर अंधेरा, कृपा होय पथ को दर्शाते।

जीवन एक पहेली माना, ऋषि मुनि हारे कुछ ना जाना।
मिटे लहर सागर के संग जब, नाचे सागर बस यह जाना।
माना स्वप्निल सारी दुनिया, अपना हमें बना लो छलिया।
ज्ञान मिले मिट बहूँ तुझी में, सत्य तुही भर आई अंखियां।

105

जीवन यह क्यों सांसे लेता, तुम बिन हरि मैं ना रह पाऊँ।
विछुड़ गये जब से तुम मोहन, रोऊँ हरपल नीर बहाऊँ।
इस जीवन के तुम ही स्वामी, तुम ही सर्जक तुम ही पालक।
नीर बहाती मेरी अंखियां, कृपा करो मैं तेरा बालक।

घना अंधेरा अज्ञानी मैं, दीप जला दो मेरे घट में।
तुमको पाऊँ नैन बिछाऊँ, सफल होय जीवन इस जग में।
हरि हरि जपें करें हम पूजा, मेरे इन नयनों में बस जा।
नहीं डरायें काली रातें, रोम रोम में मेरे छा जा।

बन्शी तेरी सदा बज रही, जल में प्यासी यहाँ फिर रही।
कण कण में तू बसा हुआ है, क्यों अंखियां ना खोज पा रही।
कैसे पूजा करूँ तुम्हारी, पथ ना दीखे चल चल गिरता।
पांव पड़ू. मैं दास तुम्हारा, इन नयनों से पानी गिरता।

-: अनुक्रम :-

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
1.	ओम हरी हर ओम हरी हर।	9
2.	ओम जप खिलता कमल	9
3.	मन ओम जपो जप इसे लखो।	10
4.	क्या मेरा सब है तेरा।	10
5.	बीत रहे दिन तुम ना आये।	11
6.	खिल कर यहाँ होवें विलय।	11
7.	क्या है दुनिया क्या हैं हम।	12
8.	प्यार तेरा सदा चाहें।	12
9.	तुम सर्जक तुम ही पालक।	13
10.	प्यार करो हरि से पागल।	13
11.	नाचते हो कर विवश सब।	14
12.	जग से प्रीति करे दुख होई।	14
13.	दुख ना मिटते प्रीति बिना हरि।	15
14.	मांगता तेरी दया को।	15
15.	हरि तुम राखो लाज हमारी।	16
16.	जप हरि जप हरि जप ले तू मन।	16
17.	कितनी पीड़ा दर्द यहाँ है।	17
18.	जो भी चाहें वह ना होवे।	17
19.	हरि बस जाओं नयनों में।	18
20.	जख्म इस दिल में लगे जो।	18
21.	हरि भक्ति हरि कृपा से होई।	19
22.	हरि मैं तुमसे प्रीति बढ़ाऊँ।	19
23.	किस कोने में बैठे हरि तुम।	20
24.	सुनो हरी हर तुझे बोले।	20
25.	हरि हरि सुमरे हरि मनावें।	21
26.	मेरे मन्दिर में हरि बसना।	21

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
27.	क्या पाना और यहाँ खोना।	22
28.	ताप हरे सुख पावे जिवड़ा।	22
29.	जप ले हरि को वह दुख भंजक	23
30.	लहर न खोजे अन्तस सागर।	23
31.	अनजानी डगर जायें किधर।	24
32.	जप ले हरि को मन जपता जा।	24
33.	बह ले मन बह हरि में खो जा।	25
34.	हरि हरि सुमरो जग में जी लो।	25
35.	हरि सदा जपते रहेंगे।	26
36.	चाहत तज बह सागर में मन।	26
37.	जपो हरि को द्वन्द सभी तज।	27
38.	कौन हो तुम कुछ कहो तो।	28
39.	सदा हम तुमको मनाये।	28
40.	नयन से मेरे नीर गिरते।	29
41.	क्या कहें किसको यहाँ हम।	29
42.	जगत पिता तुम सबके पालक।	30
43.	हरि हरि जपें हरो दुख सारे।	30
44.	मन रोया पर तुम नहीं मिले।	31
45.	हरि मन बहलाऊँ मैं कैसे।	31
46.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	32
47.	आश्वासन मिलते यहाँ बहुत।	32
48.	ढल रही है शाम अब तो।	33
49.	पियूं मैं नाम की मदिरा।	33
50.	हरि हरि जप मन प्रेम बढ़ेगा।	34
51.	यह बह रही है जिन्दगी।	34
52.	सांस तेरा गीत गायें।	35
53.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	35

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
54.	आंख यह रिमझिम बरसती।	36
55.	सागर में कितनी लहर उठें।	36
56.	बह रही है जिन्दगी यह ।	37
57.	हरि यह विनय है हमे प्यार देना।	37
58.	खोज पी को पी रटो मन।	38
59.	हरि कहते बीते जीवन।	38
60.	हरि हरि जपो कट जाये सफर।	39
61.	गा गीत उसी के देख जगत।	39
62.	हरि हरि जपें तुझे ना भूले।	40
63.	निशदिन बरसत नयन हमारे।	40
64.	किसको सुनाये दर्द हम।	41
65.	नीर मैं किसको दिखाऊँ।	41
66.	हरि जपो कटता सफर है।	42
67.	कुछ न पाना कुछ न खोना।	42
68.	कुछ किया ना ज्ञान था ना।	43
69.	जागो मोहन अब तो प्यारे।	43
70.	ले चल नौका मेरे खेवट।	44
71.	मन गीत सुना यह कटे सफर।	44
72.	आंख में आंसू हमारे।	45
73.	कुछ गीत कहो तो गा दूँ।	45
74.	प्रभु दर्शन को तरसे नयना।	46
75.	प्रियतम प्यारा वह मन भावन।	46
76.	मेरे जीवन अन्तर्यामी।	47
77.	शाम जाती रात आती।	47
78.	किसको कहें अपना यहाँ।	48
79.	मेरे नयना हरि तुम देखो।	48
80.	मन गीत सुना जियरा रोये।	49

क्र०	कविता का नाम	पृष्ठ सं०
81.	बंशी बजैया रास रचैया।	49
82.	मांगू क्या मर्जी तेरी।	50
83.	मर्जी हरी की नाचते।	50
84.	दिन बीते ना आये बालम।	51
85.	गीत सुना मन हरि ही भाये।	51
86.	हरि हरि जप मन प्रीति बढ़ा ले।	52
87.	ले चल नाविक नदिया गहरी।	52
88.	जग सुपना मन लेता सुपना।	53
89.	हरि हरि बोलो हरि को जी लो।	53
90.	ढूंढते खो जायेंगे हम।	54
91.	हरि हरि जप मन प्यार बढ़ा ले।	54
92.	नयनों से जो झरती पीड़ा।	55
93.	दिन बीते हरि तुम ना आये।	55
94.	क्या करूँ मैं ध्यान तेरा।	56
95.	चाहते थे प्यार को हम।	56
96.	बहलाऊँ इस दिल को कैसे।	57
97.	तेरे दर पर आये हम।	57
98.	हरि हरि जपो मिलेगा चैना।	58
99.	क्या करें शिकवा किसी से।	58
100.	दर्शन की यह प्यासी अंखियां।	59
101.	हरि हर तुझे पुकारूँ सुन ले।	59
102.	जो भी है सहना ही होगा।	60
103.	आवाज तुझे मैं दूँ।	60
104.	हरि हरि गायें तुझे मनायें।	61
105.	जीवन यह क्यों सांसे लेता।	61